अक्तूबर 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

Snazzy cap
Multi - Band Radio inside
Parry's
COFFY BITE
Parry's
COFFY BITE
Madcap
CONTEST
जीतिए 30,000 इनाम !
जीतिए 10,000 रेडियो कैप
1,250 अर्ली बर्ड ईनाम हर हफ्ते
40 रैपर्स भेजने पर
जीतिए 20,000 स्पीडस्टर कार्स
2,500 अर्ली बर्ड ईनाम हर हफ्ते
20 रैपर्स भेजने पर
कॉफ़ीबाईट रैपर्स जमा कीजिए
एंट्रीफार्म में मज़ेदार
जवाब लिखिए
हर सप्ताह इनाम जीतिए,
8 सप्ताह के लिए !
Parry's
COFFY BITE
रु.10,00,000 मूल्य की 500 छात्रवृत्तियाँ
(प्रति रु.2000 की)
Parry's
COFFY BITE
मुफ़्त ! एक मज़ेदार टैटू हर 4 कॉफ़ीबाईट के साथ
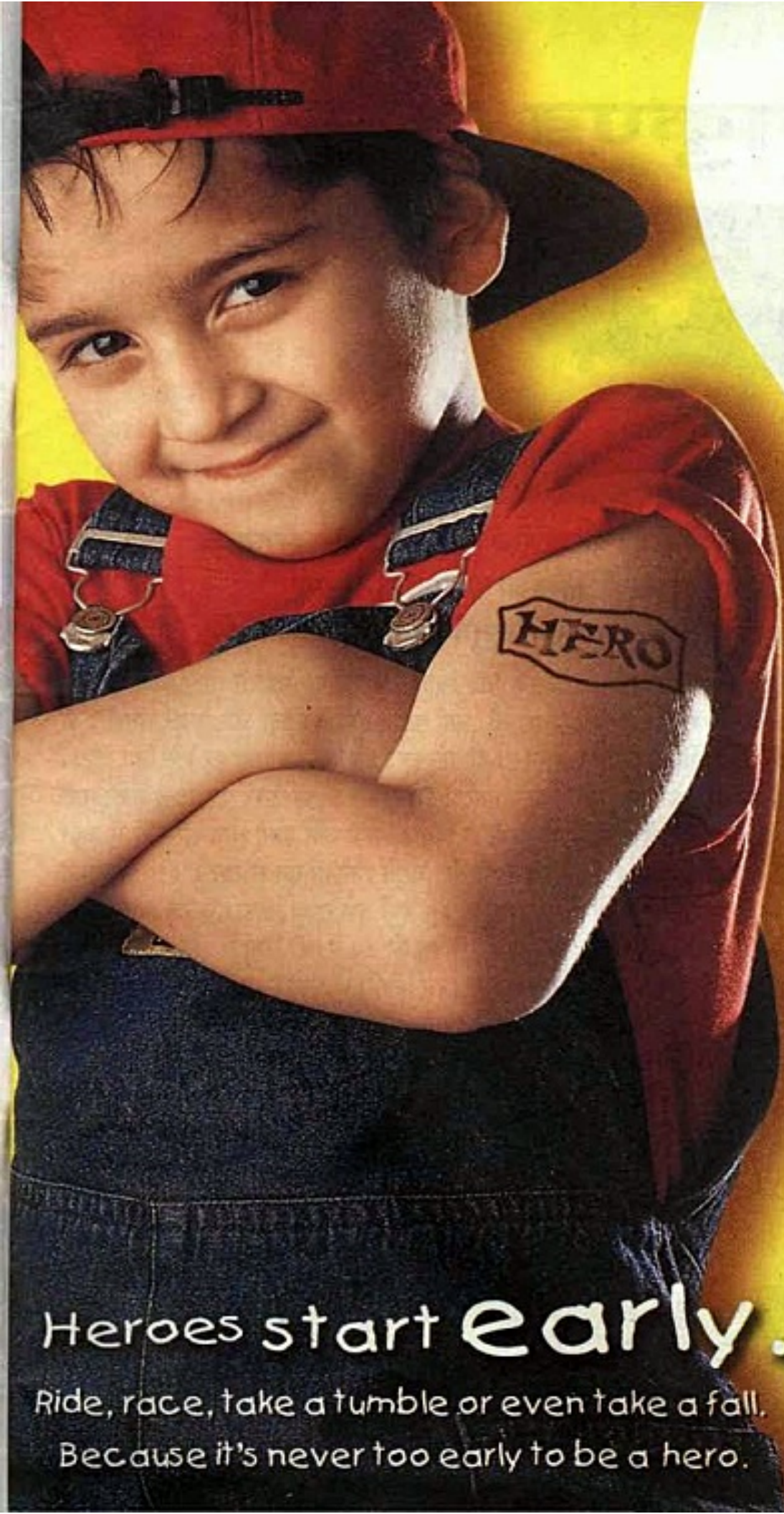
PIRANHA

ACTIVE

CADET HX

YANKEE

ROBO COP

Heroes start early.

Ride, race, take a tumble or even take a fall.
Because it's never too early to be a hero.

गोलकुण्ड क़िला
हैदराबाद

अमिताभ बच्चन गोलकुण्ड में है। वह हर रोज क़िले में गोलकुण्ड साम्राज्य और कुतुब शाही शासकों की गाथा का सोनेत्त-लुमिएर प्रदर्शन में वृत्तान्त विवरण प्रस्तुत करता है।

गोलकुण्ड क़िला सन् ११६३ में देवगिरि के यादव शासकों द्वारा निर्मित किया गया था। सम्भवतः इसका नाम गोला कोण्डा यानी गड़ेरियों की पहाड़ी से लिया गया है। यह क़िला बाद में काकातीया राजाओं के हाथ आ गया और फिर तेलंगाना में ब्राह्मनी शासकों के प्रतिनिधि सुलतान क्यूली ने इसे ले लिया जिसने सन् १५१८ में अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
लगभग चार दशकों तक शानदार शासन के बाद कुतब शाही खान्दान का संस्थापक अपने ही बेटे जमशीद के आदेश पर ९९ वर्ष की परिपक्व उम्र में मार दिया गया।
जमशीद ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली और उसके भाई इब्राहिम ने भागकर पड़ोसी राज्य विजयनगर में शरण ली, जहाँ वह ७ वर्षों तक रहा और केवल जमशीद के मरने पर ही गोलकुण्ड की गद्दी का दावा करने के लिए लौटा। बिजय नगर में आबास के दौरान उसने एक हिन्दू राजकुमारी भागीरथी से विवाह किया और कला तथा संस्कृति में बहुत दिलचस्पी ली। उसने शानदार ढंग से सन् १५८० में अपनी मृत्यु पर्यन्त ३० वर्षों तक राज्य किया। उसके बेटे मुहम्मद क्यूली ने १५ वर्ष की उम्र में गद्दी संभाली और ३३ वर्षों तक राज्य किया। इस अवधि में उसने हैदराबाद का निर्माण किया और उसके चारों ओर झीलें बनवाईं तथा बाग लगवाये।

एक समय गोलकुण्ड में एक बन्दी आगन्तुक आया - 'रामदास'। भद्राचलम मंदिर के आराध्य देव भगवान राम के प्रति भक्ति के कारण ही उन्हें लोग ऐसा कहते थे। कंचरला गोपन्ना गोलकुण्ड का कर-समाहर्त्ता था जो एकत्र किया हुआ कर का धन मंदिर के विस्तार में खर्च किया करता था।

इस गबन के अपराध में गोलकुण्ड के तत्कालीन शासक अबुल हसन ने उसे बंदी बना लिया। बाद में, भगवान राम राजा के स्वप्न में प्रकट हुए और 'रामदास' गोपन्ना द्वारा खर्च की गई राशि की रसीद दिखलाई।

राजा इतना प्रभावित हुआ कि उसने तुरंत गोपन्ना को रिहा कर दिया और भद्राचलम मंदिर के लिए अनुदान तथा आभूषण की स्वीकृति प्रदान की।

कुतब शाही के शासक कला के बड़े संरक्षक थे तथा संगीतज्ञों व नर्तकों को प्रोत्साहित करते थे। उर्दू और फारसी के समान तेलुगु को भी महत्व दिया जाता था। कुतब शाहियों ने १६८७ तक राज्य किया। आह ! जिस प्रकार संस्थापक का जीवन एक षड्यंत्र में समाप्त हो गया, उसी प्रकार तेलुगु भाषियों में तानाशाह के रूप में लोकप्रिय अंतिम शासक अबुल हसन भी अन्दरूनी विश्वासघात के कारण गोलकुण्ड साम्राज्य को खो दिया।

गोलकुण्ड, अन्यथा एक अपराजेय गढ़ था और मुगल सम्राट औरंगजेब को इसकी आठ महीनों तक घेराबंदी डालने के बाद भी सफलता नहीं मिली थी। लेकिन तब तक सेना के अंदर राजद्रोही पैदा हो गये थे और उन्होंने रिश्वत लेकर गुप्तद्वार से आक्रामकों को अंदर जाने का मार्ग बता दिया।

तानाशाह को बंदी बना लिया गया और कारागार में उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार दक्कन के शानदार युग का अंत हो गया।

आन्ध्र प्रदेश पर्यटन ने इस समग्र गाथा को एक साथ एक अद्वितीय ध्वनि एवं प्रकाश प्रदर्शन में गोलकुण्ड क़िला में प्रस्तुत किया है, जिसे देश भर में सर्वोत्तम माना जाता है। अमिताभ बचन का वृत्तात विवरण गोलकुण्ड की गरिमा और त्रासदी को पुनर्जीवन्त बना देता है।

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ अक्तूबर - २००२ सञ्चिका - १०

सिद्धेंद्र का हितबोध

१९

नेत्रहीन भिक्षु

२५

माया सरोवर-९

११

वह चोर नहीं, पर चोर है

२८

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division

CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

उत्सव की भावना

एक बार फिर यह पर्व का समय है जब परिवारों का पुनर्मिलन होता है, जब जाति, रंग और पन्थ का भेदभाव भूलकर भिन्न-भिन्न समुदाय के लोग एक साथ एकत्र होते हैं; इससे सामंजस्य और शान्ति को सचमुच प्रोत्साहन मिल सकता है।

लेकिन क्या यह उन लोगों को याद करने का अवसर भी नहीं है जिन्होंने हमारे जीवन की रक्षा करने में अपना सारा जीवन-काल लगा दिया, किन्तु ये अपने प्राण उन लोगों के कायरतापूर्ण आक्रमण में गवां सकते थे, जिनके हृदय में मानव-मूल्यों अथवा मानव-जीवन के लिए कोई आदर नहीं और जो अपने संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा फैलाने में आनन्द अनुभव करते हैं। उन परिवारों के बारे में सोचें जो एक-दो निर्दोष प्राणियों के चले जाने से अधिक अनाथ हो जाते, ऐसे प्राणियों के जो उनके भविष्य में एक मात्र सहारा बनते।

केवल मानव प्राणियों की ही बात क्यों? प्रकृति के विरुद्ध और प्रकृति की सन्तानों के विरुद्ध भी हिंसा हो रही है। हम भूल जाते हैं कि एक जमाने में मनुष्य और पशु-पक्षी एक साथ रहकर शान्तिपूर्वक जीवन यापन करते थे।

अक्तूबर में हम राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी का जन्म दिवस मनाते हैं। उन्होंने 'मेरे सपनों का भारत' की परिभाषा दी है जिसमें ''अकिंचन से अकिंचन व्यक्ति भी महसूस करेगा कि यह मेरा भारत है, जिसके निर्माण में उनकी आवाज का असर होगा; एक ऐसा भारत जिसमें न कोई उच्च वर्ग होगा न निम्न वर्ग, एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय के लोग पूर्ण सामंजस्य के साथ रहेंगे।''

यदि केवल उत्सव की भावना को पुनर्ग्रहण करें तो पर्व, जिनका उद्देश्य ही ऐसे सामंजस्य को प्रोत्साहित करना है अधिक अर्थपूर्ण हो जायेंगे।

सम्पादक : *विश्वम*
Visit us at : http://www.chandamama.org
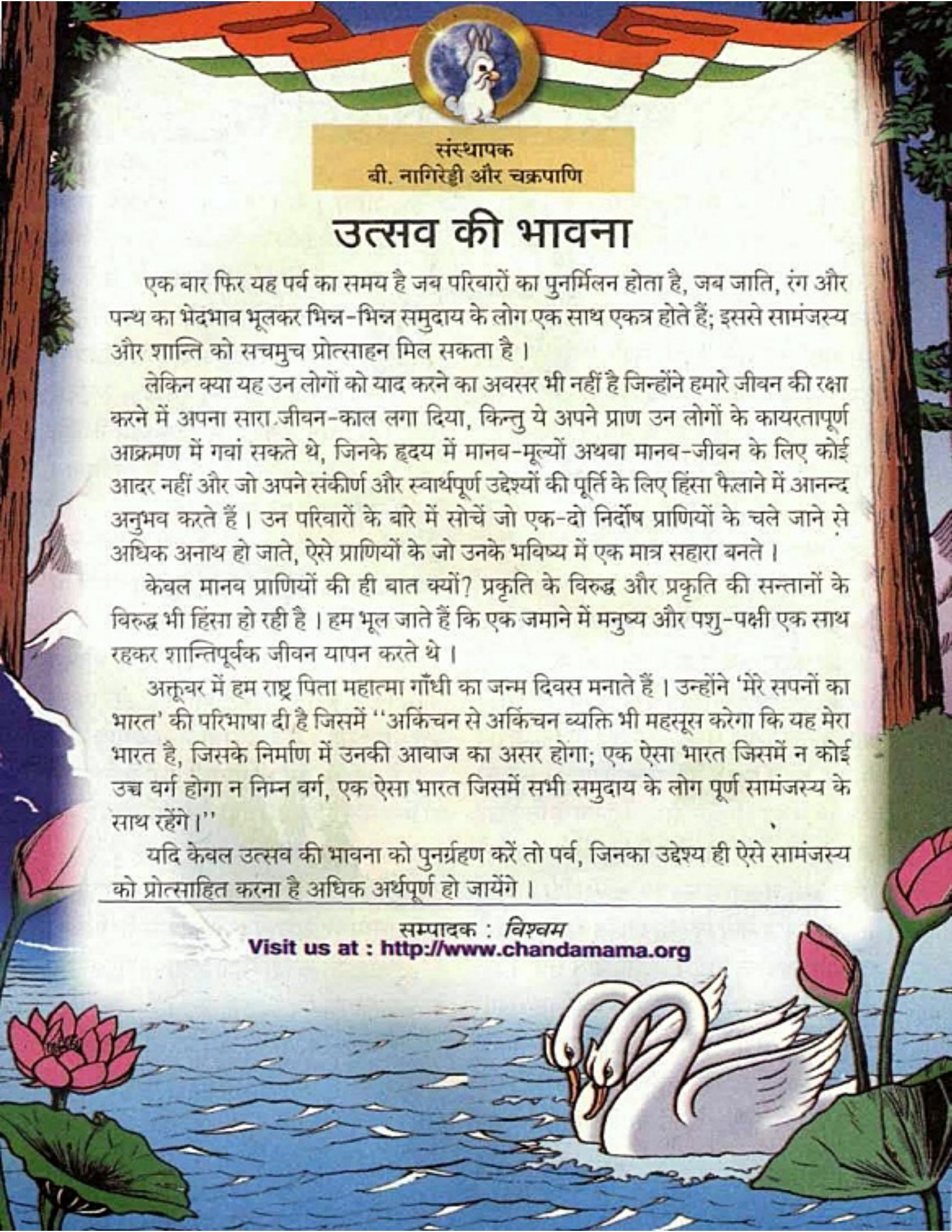
भारत के उपराष्ट्रपति

एक राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री अब भारत के उपराष्ट्रपति हैं । श्री भैरों सिंह शेखावत, जो तीन चुनावों में लगभग १२ वर्ष तक राजस्थान के मुख्यमंत्री रह चुके हैं, श्री सुशील कुमार शिंडे के विरुद्ध सीधे संघर्ष में उपराष्ट्रपति चुन लिये गये । लोकसभा तथा राज्य सभा के सदस्यों की सम्मिलित निर्वाचक मण्डली में, जिसमें ७८८ सदस्य हैं, श्री शेखावत की १४९ मतों से जीत हुई ।

श्री शेखावत का जन्म सन् १९२३ में २३ अक्तूबर को राजस्थान के सिकर जिले के एक गाँव में हुआ । उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ये स्थानीय राजनीति के मैदान में कूद पड़े । पहली बार ये जनसंघ की ओर से १९५२ में राज्य विधान सभा में चुनाव के लिए खड़े हुए और दाता रामगढ़ क्षेत्र से निर्वाचित कर लिये गये । दूसरे चुनावों में सन् १९५७ में सीरी माधोपुर निर्वाचन क्षेत्र से ये विजयी घोषित किये गये ।

पाँच वर्षों के बाद ये किशन पोल क्षेत्र से चुने गये जिसे उन्होंने सन् १९६७ में बरकरार रखा । सन् १९७७ में ये जनता पार्टी के टिकट पर चाबदा क्षेत्र से निर्वाचित हुए । सन् १९८० में उसी क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव जीता । सन् १९८५, १९९० तथा १९९३ में ये निम्बध, धौलपुर तथा बाली से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीता । पूरे राजस्थान में अपनी लोकप्रियता के कारण ये सन् १९७७, १९९० और १९९३ में ये मुख्यमंत्री चुने गये । ये सन् १९९८ में पूरे चुनाव अवधि तक अपने पद पर बने रहे ।

राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में जाने के लिए दिये गये सभी प्रलोभनों को ठुकराकर ये राज्य में भारतीय जनता पार्टी के नेता की भूमिका में ही सन्तुष्ट थे । एक बार उन्होंने खुलेआम घोषित किया कि राजनीति में कोई शत्रु नहीं हो सकता और दोनों समय जब वे सत्ता में थे तथा जब वे सत्ता में नहीं थे, तब भी विरोधी दलों के सदस्यों को मित्र बना लिया । सत्ताधारी राष्ट्रीय डेमोक्रैटिक अलायन्स द्वारा बहुत मनाने के बाद ही ये उपराष्ट्रपति पद के लिए राजी हुए । निस्सन्देह इन्हें अलायन्स के सभी दलों का समर्थन मिला ।

उपराष्ट्रपति के रूप में श्री शेखावत राज्य सभा के अध्यक्ष का पद भी संभालेंगे ।

अपने लाखों पाठकों की ओर से चन्दामामा उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत को शुभकामनाएँ भेजता है ।

बादाम और चन्दन...
चिंटू की पसन्द
मैं सिर्फ़ यह साबुन चाहता हूँ।
उत्कृष्ट पसन्द, मैडम ! मैसूर चन्दन बेबी साबुन चन्दन के तेल और बादाम के तेल से भरपूर है। यह त्वचा के लिए अति उत्तम है।
स्मार्ट बच्चे सदा मैसूर चन्दन बेबी साबुन पसन्द करते हैं।
Mysore Sandal Baby Soap
द हाऊस ऑफ मैसूर सन्दल
चन्दन की खुशबू सीधे आपके घरों में
८० से भी अधिक वर्षों से ला रहा है।
Almond oil moisturiser and antiseptic soap.

आरकू घाटी

अगली बार यदि तुम किसी पहाड़ी स्थान पर जाने का निश्चय करो तो आन्ध्र प्रदेश की आरकू घाटी में कुछ दिन बिताने पर विचार कर सकते हो। आरकू एक शान्त और रमणीय घाटी है। यह बिशाखापतनम से लगभग ११२ कि.मी. दूर पूर्वी घाट की अनन्तगिरि पहाड़ियों में ९५ मीटर की ऊँचाई पर बसी हुई है। बारहमासी ज़िल्दा जलप्रपातों का जल यहाँ हमेशा आता रहता है।

यहाँ मुख्यतः आदिबासी रहते हैं और यह पूर्णतया सुरक्षित स्थान है। यहाँ की शीतल और बलबर्द्धक जलबायु और शामक मनोहर प्राकृतिक परिदृश्य के कारण पर्यटकों के लिए यह एक आकर्षक पड़ाव बन गया है।

आरकू में काफी संख्या में आदिबासी रहते हैं जिन्हें स्थानीय हाटों में अपनी बस्तुएँ जैसे उनके हाथ के बने झाड़ू, इमली, शहद बेचते हुए या कुछ खरीद करते हुए देखा जा सकता है। आरकू घाटी के निकट लाखों वर्ष पुरानी बोर्रा गुफाएँ पर्यटकों के लिए बहुत बड़े आकर्षण हैं। टायडा में स्थित प्रकृति-शिविर जंगल बेल्स भी पहुँच के अंदर है।

आरकू में आदिवासी आवास का एक रोचक अजायब घर है जो आदिबासियों की जीवन शैली, संस्कृति और कला का इतिवृत लिखता और प्रदर्शित करता है। यहाँ आदिवासियों का एक आदर्श गाँव भी है।

आरकू में हरे-भरे बनस्पति संग्रहालय और बागों से जहाँ अनेक आकर्षक पौधे और बृक्ष देखे जा सकते हैं, होते हुए लम्बी आनन्द दायक सैर के लिए जा सकते हैं।

वहाँ कैसे पहुँचे

आरकू घाटी जो बिशाखापत्तनम से ११२ कि.मी. दूर है, सड़क अथवा रेल द्वारा जा सकते हैं। आरकू कोट्टा वालसा-किरनदूल रेल मार्ग पर रेल शीर्ष है, जहाँ आने के लिए हर सुबह बिशाखापतनम से ट्रेन चलती है और शामको लौट जाती है।

माया सरोवर

9

(जयशील से फेंका गया बाण जैसे ही नरवानर को लगा, कृपाणजित्त ने पहाड़ी के नीचे देखा। उसने अपने शत्रु जयशील को पहचान लिया। वह फिर तुरंत गडेकोंडा के अनुचरों के साथ मिलकर बस्ती की ओर भागा। गडेकोंडा ने उसका मज़ाक उडाया तो कृपाणजित्त नाराज़ हो उठा और नरमानव को उसपर टूट पड़ने के लिए उकसाया। - बाद)

गडेकोंडा के अनुचरों ने जब देखा कि कृपाणजित्त उनके सरदार पर टूट पड़ने के लिए नरमानव को उकसा रहा है तो वे नाराज़ हो उठे। हथियार लिये वे कृपाणजित्त पर हमला करने आगे बढ़े। उन्हें देखकर कृपाणजित्त डर गया। भले ही वे नाटे क्यों न हों, वे अधिक संख्या में थे और वह अकेला था।

कृपाणजित्त ने तब एक चाल चली। उसी की ओर बढ़ते हुए गडेकोंडा के अनुचरों से उसने हँसते हुए कहा, ''जल्दबाजी मत करो। मैं तो तुम लोगों का जिगरी दोस्त हूँ। मैं सिर्फ दिखाना चाहता था कि नरवानर मेरा कितना बड़ा पालतू जानवर है।'' यह कहते हुए उसने नरवानर के हाथों में बंधे गडेकोंडा को छुडाया।

उस समय गडेकोंडा भय के मारे थर-थर काँप रहा था। वह बस्ती की एक झोंपडी के सामने बैठ गया। उसके अनुचर उसे घेरकर खड़े हो गये और पूछने लगे कि हम आगे क्या करें?

गडेकोंडा तब तक समझ चुका कि उस सुदृढ़ मानव की सहायता लेकर उसने बहुत बड़ी ग़लती की।

धीमे स्वर में उसने अनुचरों से कहा, ''मेरी बातें तुम लोग सावधानी से सुनो। वह अपने नरवानर के बग़ल में खड़े होकर हमारी ही तरफ़ घूर-घूरकर देख रहा है। सीधा मुक़ाबला करके हम उसे जीत नहीं सकते। उस बानर को और उस लंबी तलवार को हमें अधीन करने होंगे। तभी जाकर, हममें से कुछ मर क्यों न जाएँ, उससे पिंड छुड़ा सकते हैं।''

''आपने सही सोचा, पर इसके लिए क्या करें, कैसे करें?'' एक नाटे ने पूछा। ''यह बलिष्ठ मानव मर जायेगा तो गडेका रानी आसानी से हमें बरबाद कर देगी। अब उस दुष्ट रानी के साथ राक्षस जैसे दो आदमी भी हैं। वे अवश्य उसकी सहायता करेंगे।'' एक और नाटे ने अपना भय व्यक्त किया।

गडेकोंडा ने नाराज़ होते हुए उन दोनों से कहा, ''अगर मरना ही है तो अपनी ही जाति के लोगों के हाथों मरेंगे। इसका एक और उपाय भी है। हम रानी से समझौता कर लेंगे। उससे कहेंगे कि हम तुम्हारे सेवक बने रहेंगे। उससे क्षमा माँगेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि वह हमें माफ़ कर देगी।''

दूर खड़ा कृपाणजित्त यह सब कुछ देख रहा था। वह अपने बानर को साथ लिये उनके पास आया। उसने गडेकोंडा से कहा, ''साफ़-साफ़ बताओ, मेरे ख़िलाफ़ क्या साजिश हो रही है? क्या मुझे मार डालना चाहते हो? सच बताओ।'' ज़ोर देते हुए उसने पूछा।

गडेकोंडा उठ खड़ा हो गया और बोला, ''बलवान जी, हम कोई साजिश नहीं कर रहे हैं। हम लोग बहुत परेशान हैं। विपत्तियों में फंस गये हैं। हम चाहते हैं कि सूर्यास्त के पहले ही जंगल में दूर चले जाएँ।''

गडेकोंडा की ये बातें सुनकर कृपाणजित्त बिल्कुल घबरा गया। जंगल में रहते हुए उसने जो-जो तक़लीफ़ें सहीं, एक-एक करके उसे याद आने लगीं। उसने तुरंत बड़े ही नम्र स्वर में गडेकोंडा से कहा, ''गडेकोंडा, तुम डरो मत। तुम लोग मेरी सहायता करोगे तो आज आधी रात को उनका सर्वनाश कर दूँगा। मैं और मेरा

नरवानर उन्हें हमेशा के लिए सुला देंगे। फिर इसके बाद तो इन पर्वतों के, इन जंगलों के तुम्हीं एकमात्र राजा बनोगे। जय गडेकोंडा महाराज की!'' कहकर वह चिल्ला पडा।

इसपर गडेकोंडा ने खुश होते हुए सिर हिलाया। कृपाणजित्त ने नरवानर की जंजीर पकड़कर उसे आगे खींचते हुए कहा, ''हम दोनों बहुत भूखे हैं। हमारे खाने का इंतज़ाम करो,'' कहते हुए वह अपनी झोंपड़ी की ओर बढ़ा।

''तुम दोनों का खाना वहाँ तैयार है,'' गडेकोंडा ने आप ही आप हँसते हुए कहा। कृपाणजित्त की झोंपड़ी बाक़ी झोंपड़ियों से थोड़ी दूर थी। वहाँ पहुँचने के बाद ऊँचे स्वर में उसने कहा, ''आधी रात तक मैं खूब सो जाऊँगा। तब तक मुझे जगाना मत। उसके बाद शत्रु संहार होगा।''

गडेकोंडा ने और खुश होते हुए सिर हिलाया। वह अपने साथ चार विश्वासपात्र व साहसी अनुयायियों को अपनी झोंपड़ी में ले गया। फिर चार घंटों के बाद यह घटना घटी। सोता हुआ कृपाणजित्त अचानक जाग उठा और कहने लगा, ''तेल की यह कैसी बू''। फिर इर्द-गिर्द देखते हुए वह चिल्ला पड़ा, ''बाहर कौन है? एरंडी के तेल की यह कैसी बदबू?''

बाहर से तुरंत जवाब सुनायी पड़ा, ''महाशय, यह एरंडी के तेल की बू नहीं है। यह तो तिल का तेल है। हम नहीं चाहते कि मच्छरों व कीड़े-मकोड़ों से आपकी निद्रा में बाधा पड़े।

हम तो चाहते हैं कि आप आराम से सोयें। आधी रात को शत्रु संहार के लिए जाना भी तो है,'' गडेकोंडा के एक आदमी ने बाहर से चिल्लाते हुए कहा।

''बहुत अच्छा,'' कहते हुए कृपाणजित्त ने ज़ोर से जंभाई ली और आँखें बंद कर लीं।

उस समय गडेकोंडा अपने कुछ अनुचरों के साथ वहाँ आया। इशारा करते ही एक नाटा चुपचाप झोंपड़ी के अंदर गया और दीवार से सटाकर रखी गयी तलवार ले आया। फिर झोंपड़ी के चारों ओर आग लगा दी।

एक-दो मिनटों के अंदर ही सोते हुए कृपाणजित्त को लगा कि उसका शरीर जल रहा है। वह ज़ोर से चिल्ला उठा, ''धोखा, धोखा, मैं इसका बदला लेकर ही रहूँगा,'' कहते हुए उसने

तलवार के लिए दीवार की तरफ़ देखा। तलवार वहाँ नहीं थी।

इतने में नरमानव भी ज़ोर से चिल्ला पड़ा और जंजीर को खींचने में अपना पूरा बल लगाया। उसकी कमर में बंधी जंजीर टूट गयी। आग को चारों ओर से घिरते हुए देखकर भय के मारे वह झोंपड़ी के दरवाज़े की ओर दौड़ा। कृपाणजित्त ने तब अपने को बचाने के लिए कोई और चारा न पाकर टूटकर उसकी कमर में लटकती हुई जंजीर को पकड़ लिया। वानर फुर्ती से दरवाज़ों को तोड़ता हुआ बाहर आया। उसके साथ-साथ कृपाणजित्त भी बाहर आते हुए उल्टे गिर गया। अब जंजीर उसके हाथ से छूट गयी।

गडेकोंडा ने जब यह दृश्य देखा तो उसने चिल्लाते हुए अपने अनुचरों से कहा, ''नरवानर को जाने दो, पर इस कृपाणजित्त को भालों से भोंक डालो।''

कृपाणजित्त भय के मारे काँपने लगा। उसने पास ही पड़ी हुई एक सूखी लकड़ी ली और चिल्लाते हुए गडेकोंडा के अनुयायियों को मारने लगा।

बस्ती के और नाटे लोगों ने देखा कि आग की लपटें फैल रही हैं। ज़ोर-ज़ोर की चिल्लाहटें सुनायी पड़ रही हैं। उस समय जंगल के वृक्षों के तले दो विचित्र प्राण थे। घोड़ों की तरह के दो अद्भुत जंतुओं पर वे सवार थे। उन जंतुओं के शरीर मछली के मांस जैसे किसी पदार्थ से ढके हुए थे। ध्यान से देखने पर लगता था कि वे मकरकेतु का वाहन जलग्रह जैसे थे। दोनों घुड़सवार मछली के चमड़े से बने कपड़े पहने हुए थे। उनकी कमरों में लंबी-लंबी तलवारें लटक रही थीं।

उनमें से एक ने तुरंत म्यान से तलवार निकाली और कहा, ''अग्रज सर्पनख, लगता है कि कोई उस बस्ती को जला रहा हैं। शायद उनके शत्रुओं का यह काम होगा। वे उसका सर्वनाश करने पर तुले हुए लगते हैं।''

दूसरे का नाम था सर्पसख। उसने चिढ़कर कहा, ''सर्वनाश होने दो। हम हैं, दूसरे लोक के और यह है एक और लोक। हमें, इससे क्या लेना-देना है? जो भी हो, हो जाने दो। क्या भूल गये कि हम यहाँ किस काम पर आये हैं? क्या भूल गये कि हम इन जंगलों में क्यों भटक रहे हैं?''

''हाँ, हाँ, याद है, सबकुछ याद है।'' कहते हुए सर्पनखा घोड़े पर खड़ा हो गया और बस्ती की ओर देखते हुए आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, ''बड़ा ही विचित्र लग रहा है। एक भयंकर नरवानर गिरता-पड़ता हुआ भाग जाने की कोशिश में लगा हुआ है। नाटे लोग उसे इधर-उधर उछाल रहे हैं। उसके साथ है एक साधारण मनुष्य। नाटे लोग उसे तरह-तरह से सता रहे हैं। यह सब कुछ देखते हुए कैसे चुप रह सकते हैं?''

''मैं थोड़े ही यह सबकुछ जानता था। उस नरवानर को और उस मानव को हमें सजीव पकड़ना होगा। हो सकता है, उस मानव के द्वारा हम अपने खोये हुए भाई का पता लगा पाएँ,'' कहते हुए सर्पसख ने अपने घोड़े को सहलाया। फिर जीन के चारों ओर लटकती हुई कमल के कंदों से बनी रस्सी हाथ में ली।

दोनों तेज़ी से गडेकोंडे की बस्ती की ओर बढ़े। नरवानर अपने मज़बूत हाथों से झोंपड़ियों को गिरा रहा था। लगता था कि कृपाणजित्त पर पागलपन सवार है। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था और सूखी लकड़ी से नाटों को पीट रहा था।

''अग्रज, मैं उस नरवानर की ख़बर लेता हूँ। उस हृष्ट-पुष्ट मानव को पकड़ो,'' कहते हुए सर्पसख ने अपना घोड़ा नरवानर की तरफ़ बढ़ाया।

सर्पनख ने कमल के कंदों की रस्सी ऊपर उठायी और उसके फंदे को कृपाणजित्त के गले की ओर फेंकते हुए चिल्ला पड़ा, ''माया सरोवर की जय!'' सर्पनख की फेंकी गयी रस्सी कृपाणजित्त के गले के चारों ओर घिर गयी। वह फंदा जब कसने ही वाला था, कृपाणजित्त ने ज़ोर से विलाप करते हुए कहा, ''महोदय,

मुझे मारना मत। वह भी तुम्हारी ही तरह का आदमी था, जिसकी मैंने पहले सहायता की थी। वह एक अजीब हाथी पर बैठा करता था।''

उसकी बातों पर चकित सर्पनख ने कहा, ''इसका यह मतलब हुआ कि तुम मकरकेतु को जानते हो। बहुत बड़ा पराक्रमी और योद्धा होते हुए उसने तुम्हारी सहायता माँगी, तो इससे मालूम पडता है कि वह विपत्तियों से घिरा हुआ है। कहो, वह मकरकेतु अब कहाँ है?''

कृपाणजित्त ने अपने दोनों हाथ फैलाते हुए कहा, ''आपकी प्रशस्त कमल कंद की रस्सी के फंदे ने मेरे कंठ को जकड रखा है। बोलना मेरे लिए संभव नहीं हो पा रहा है। कृपया उसे ढीला करेंगे?''

''हाँ, हाँ, ढीला करता हूँ। पर भागने की कोशिश की तो यह रस्सी तुम्हारे लिए यमपाश बन जायेगी। सावधान।'' सर्पनख ने गंभीर स्वर में कहा।

रस्सी जब थोड़ी-सी ढीली कर दी गयी तब कृपाणजित्त ने कहा, ''महोदय, मुझे यह नहीं मालूम कि मकरकेतु अब कहाँ है। कुछ दिनों के पहले अमरावती नगर के जयशील नामक एक आदमी ने और उसके दोस्त एक कापालिक ने मकरकेतु को बहुत सताया। यह सच्चाई मुझे जंगल में रहनेवालों से मालूम हुई।''

इतने में गडेकोंड़ा सर्पनख के सामने आया और झुककर नमस्कार करते हुए कहा, ''ओ जल अश्व शूर, इस दुष्ट से बातें करते हुए आपने यह नहीं देखा कि आपके साथी पर क्या गुज़र रहा है।''

सर्पनख ने तुरंत चारों ओर अपनी नज़र दौड़ायी और गडेकोंड़ा से पूछा, ''मेरे भाई पर क्या गुज़रा?''

गडेकोंड़ा ने कहा, ''आपके भाई और नरवानर में मुठभेड़ हुई। दोनों लड़ते हुए उन वृक्षों के समूह में चले गये। जल अश्व दूसरी ओर भाग गया। उस नरवानर ने आपके भाई के गले को पकडकर उठाया और अपने कंधे पर डालकर दूसरी ओर भागा। वह वानर इस कृपाणजित्त का पालतू जंतु है। इसी ने उस वानर को ऐसा करने के लिए इशारे किये होंगे।''

''अरे नाटे, तुमने यह बात कहने में कितनी देर लगा दी। ले यह रस्सी। इसे तुम्हीं संभालो।'' कहते हुए उसने; वह रस्सी गडेकोंड़ा के हाथ में

थमा दी और कहा, ''यह दुष्ट कहीं भाग न जाए। इसकी जिम्मेदारी तुम पर है,'' कहते हुए वह तेज़ी से घोड़ा दौड़ाते हुए वृक्षों के बीच में गायब हो गया।

नाटों की बस्ती में जो आग सुलग रही थी, कृपाणजित्त और नरबानर से गडेकोंडा के अनुयायी जो लड़ाई लड़े रहे थे, जो चिल्लाहटें प्रतिध्वनित हो रही थीं, वे सब सुनीं जयशील और सिद्धसाधक ने जो पहाड़ी के उस तरफ़ थे। उन्होंने नाटों के सेनाधिपति को वहाँ भेजा, यह जानने के लिए कि वहाँ क्या हो रहा है और इसके क्या कारण हैं।

सेनाधिपति दो लोगों को लेकर पहाड़ी पर चढ़ गया। वहाँ से उसने बस्ती की तरफ़ नज़र दौड़ायी। वहाँ जो हो रहा था, उसे देखते हुए वह बहुत खुश हुआ। वह यह शुभ समाचार जयशील को सुनाने मुड़ने ही वाला था कि इत्तने में वहाँ आये सर्पनख व सर्पसख को उसने देख लिया।

नाटों का सेनाध्यक्ष दौड़ता हुआ आया और जयशील व सिद्धसाधक को पूरा वृत्तांत सुनाया।

यह सुनते ही सिद्धसाधक शूल उठाते हुए चिल्ला पड़ा, ''जय महाकाली!'' फिर उसने जयशील से कहा, ''जयशील, हम जिस काम पर आये हैं, वह अब अवश्य सफल होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो आदमी जलाश्वों पर सवार होकर आये हैं, वे मकरकेतु के ही आदमी हैं। उन दोनों को पकड़ लेंगे और समझा-

बुझाकर या डरा-धमकाकर उस माया सरोवर के रहने की जगह का पता लगा लेंगे। इसके बाद कनकाक्ष महाराज की संतान-कांचनवर्मा व कांचनमाला को मुक्त करके ले जायेंगे।''

इसपर जयशील ने मुस्कुराते हुए कहा, ''साधक, विचित्र अश्वों पर सवार होकर दो मानवों के आने मात्र से क्या हमारी समस्या सुलझ जायेगी? क्या हमें कनकाक्ष राजा की संतान मिल जायेगी? तुम्हारा उत्साह सराहनीय है, पर हम कुछ करें उसके पहले हमें यह सोचना होगा कि वे जलाश्वों पर सवार होकर इस प्रदेश में क्यों आये और उन्हें सजीव कैसे बंदी बनाना है।''

जयशील के इस जवाब पर साधक का उत्साह ठंडा पड़ गया और शूल को नीचे गिराते हुए उसने कहा, ''तुम्हीं सोचो कि उन्हें कैसे

सजीव पकड़ सकते हैं।'' जयशील ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाते हुए कहा, ''तुमने अपने शूल नीचे क्यों गिरा दिया? अब से क्या अपनी मंत्र शक्ति पर ही निर्भर रहनेवाले हो?''

सिद्धसाधक ने 'जय महाकाली !' का नारा लगाते हुए, शूल हाथ में ले लिया और कहा, ''जयशील, मेरी मंत्र शक्ति अब तक परिपक्व नहीं हुई है। तुमसे यह बात छिपी नहीं है कि उस दिन श्मशान में महाकाली के सेवक कालकाल ने लगभग मेरी जान ले ली थी।''

जयशील ने ''हाँ, हाँ'' कहते हुए नाटों के सेनाध्यक्ष की ओर मुड़कर कहा, ''तुम्हें अपने चंद सैनिकों के साथ हमारे पीछे-पीछे आना होगा।''

''महोदय, मैं ऐसे ही आदेश की प्रतीक्षा में हूँ।'' सेनाध्यक्ष ने कहा।

जयशील और सिद्धसाधक उन्हें लेकर थोड़ी दूर गये। बायीं तरफ़ के वृक्षों के बीच में से उन्हें नरवानर का भयंकर चीत्कार सुनायी पड़ा। सबने उस तरफ़ आश्चर्य-भरे नेत्रों से देखा।

नरवानर पेड़ों के तले कूदता-फांदता हुआ जा रहा था। उसके कंधों पर अजीब पहनावे में एक आदमी पड़ा हुआ था, जो हिलने-डुलने का नाम ही नहीं ले रहा था।
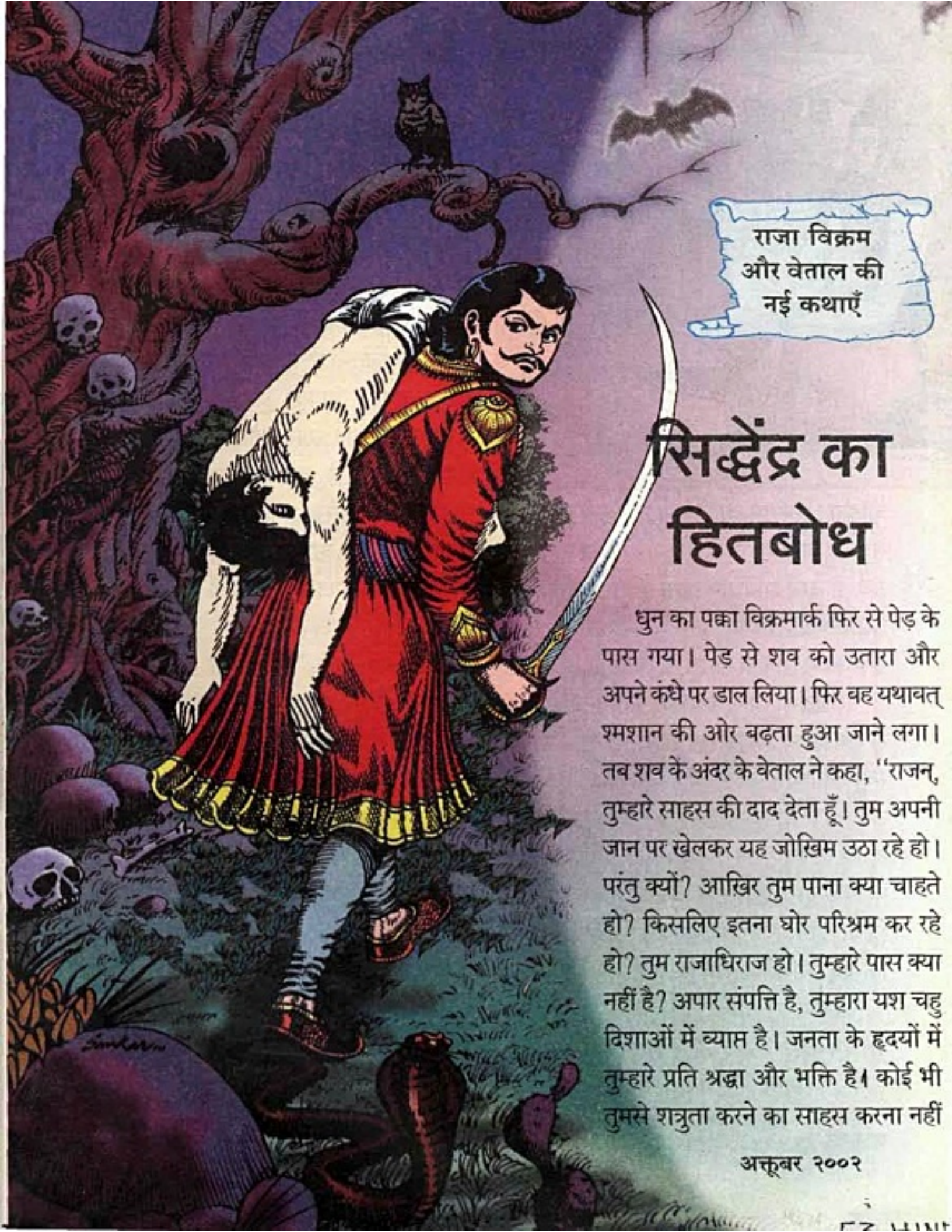
''जयशील, सजीव पकड़कर जिन आदमियों से हम माया सरोवर के रहस्य जानना चाहते हैं, यह उनमें से एक लगता है। लगता है कि वह नरवानर के हाथों मारा गया। वह दूसरा आदमी अब कहाँ होगा?'' सिद्धसाधक ने उत्सुकता-भरे स्वर में पूछा।

सिद्धसाधक अपनी बातें पूरी करे, इसके पहले ही जलाश्व पर सवार सर्पनख तेज़ी से वृक्षों के नीचे आते हुए चिल्लाने लगा, ''सर्पसख, तुम कहाँ हो सर्पसख, सर्पसख।''

जयशील ने फ़ौरन हाथ उठाते हुए कहा, ''सब लोग पेड़ों के पीछे छिप जाओ। यह जलाश्व सवार हमें देख न पाये। कैसे भी हो, हमें इसे सजीव पकड़ना होगा,'' यों उसने सबको सावधान किया।

(सशेष)

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

सिद्धेंद्र का हितबोध

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर वह यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हारे साहस की दाद देता हूँ। तुम अपनी जान पर खेलकर यह जोखिम उठा रहे हो। परंतु क्यों? आखिर तुम पाना क्या चाहते हो? किसलिए इतना घोर परिश्रम कर रहे हो? तुम राजाधिराज हो। तुम्हारे पास क्या नहीं है? अपार संपत्ति है, तुम्हारा यश चहु दिशाओं में व्याप्त है। जनता के हृदयों में तुम्हारे प्रति श्रद्धा और भक्ति है। कोई भी तुमसे शत्रुता करने का साहस करना नहीं

चाहता। फिर तुम चाहते क्या हो? कहीं तुम मंत्र-तंत्र की शक्तियाँ पाने के प्रयत्न में तो नहीं हो? तब तो तुम्हें सावधान रहना पड़ेगा, क्योंकि वह तलवार की धार पर चलने के समान है। उन्हें उपयोग में लाने से ख़तरा ही ख़तरा है।

सिद्धेंद्र नामक एक पंडित ने अपने शिष्यों में से एक शिष्य विजयसिंह को चेतावनी दी थी कि स्वार्थ की पूर्ति के लिए मंत्र-तंत्र की शक्तियों को उपयोग में लाना नहीं चाहिए। परंतु उसने अपने स्वार्थ के लिए उन सिद्धियों का प्रयोग किया। पर एक दूसरे पंडित ने विजयसिंह का समर्थन किया और अपना निर्णय सुनाते हुए घोषणा की कि यह स्वार्थ व अधर्म बिल्कुल नहीं है।

उस पंडित ने ज़ोर देते हुए बताया कि घोर परिश्रम करने के बाद जो सिद्धियाँ साधी गयी हैं, उन्हें उपयोग में लाने में क्या ग़लती है? मैं तुम्हें उदाहरणस्वरूप रविवर्मा और विजयसिंह की कहानी सुनाता हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी ध्यान से सुनो, क्योंकि इससे तुम्हारा भला होगा।'' फिर बेताल उनकी कहानी यों सुनाने लगा :

महापंडित सिद्धेंद्र अरण्य में एक गुरुकुल चला रहा था। जिन विद्यार्थियों का विद्याभ्यास पूरा हो गया, उन्हें बिदा करते हुए एक बार उसने उनसे कहा, ''मैं जितनी भी विद्याएँ जानता हूँ, आपको सिखा चुका। आपको सदा एक अति मुख्य धर्मसूत्र को याद रखना होगा। मनुष्य जो भी साधना चाहता है, वह अपने परिश्रम, आग्रह, मानसिक व शारीरिक अनुशासन के द्वारा ही साध सकता है। परंतु कभी-कभी ऐसा होता है कि घोर परिश्रम के बाद भी उसे कोई फल प्राप्त नहीं होता या परिश्रम के अनुपात में उसे सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। तभी, ऐसी स्थिति में ही आपको उन मंत्र शक्तियों को उपयोग में लाना होगा, जिन्हें आपने सीखा। ऐसा न करके अनायास ही फल पाने के उद्देश्य से इनका उपयोग किया तो इससे आपका अहित होगा।''

गुरु सिद्धेंद्र के हितवचन गौतमी पुरवासी रविवर्मा व विजयसिंह को बहुत ही सही और अच्छे लगे। वे दोनों घने दोस्त थे। दस सालों से वे दोनों इस गुरुकुल में विद्याभ्यास करते आ रहे थे। सिद्धेंद्र का आदर व प्रेम उन दोनों को समान रूप से मिला था। दोनों विद्याभ्यास पूरा करके अपने गृह लौट रहे थे। स्वस्थल लौटने से पहले

उन दोनों ने गुरु को साष्टांग नमस्कार किया। उन्हें आशीर्वाद देते हुए वे मुस्कुराये। उस मुस्कुराहट में इस बात का संकेत था कि उनकी बातें भुलायी न जाएँ।

लौटते हुए वे गोपुर नामक गाँव में पहुँचे और वहाँ की एक सराय में ठहरे। भोजन कर चुकने के बाद वे सराय के चबूतरे पर बैठ गये। उस समय ग्रामीणों की बातों से उन्हें पता चला कि उस दिन शामको वहाँ मल्लयुद्ध प्रतियोगिताएँ होनेवाली हैं। उस गाँव में त्रिनेत्र नामक एक पहलवान था।

उसे इस बात का विश्वास और गर्व था कि मल्लयुद्ध में कोई भी उसे हरा नहीं सकता। घोषणा की गयी कि जो उसे हरायेगा, उसे हज़ार अशर्फ़ियाँ भेंट स्वरूप दी जायेंगी। यह भेंट ग्रामाधिकारी उसे सौंपेंगे।

रविवर्मा ने विजयसिंह से कहा, ''विजय, हमने गुरुकुल में मल्लयुद्ध सीखा। भेंट पाने के लिए न सही, पर यह जानने के लिए कि इस विद्या में हम कितने पटु हैं, इस प्रतियोगिता में भाग लेंगे। गुरुजी ने जो प्रतियोगिताएँ चलायीं, उनमें मैंने सबको हरा दिया। मैं खुद त्रिनेत्र से मल्लयुद्ध करूँगा।''

इसपर विजयसिंह ने आपत्ति जताते हुए कहा, ''दोस्त, यह मौक़ा मुझे दो। तुम तो धनी हो। तुम्हें धन की कोई ज़रूरत नहीं। मैं तो निर्धन हूँ। हज़ार अशर्फ़ियाँ कमाने का मौक़ा मुझे दो।''

रविवर्मा ने सहर्ष उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। दोनों शामको उस जगह पर गये,
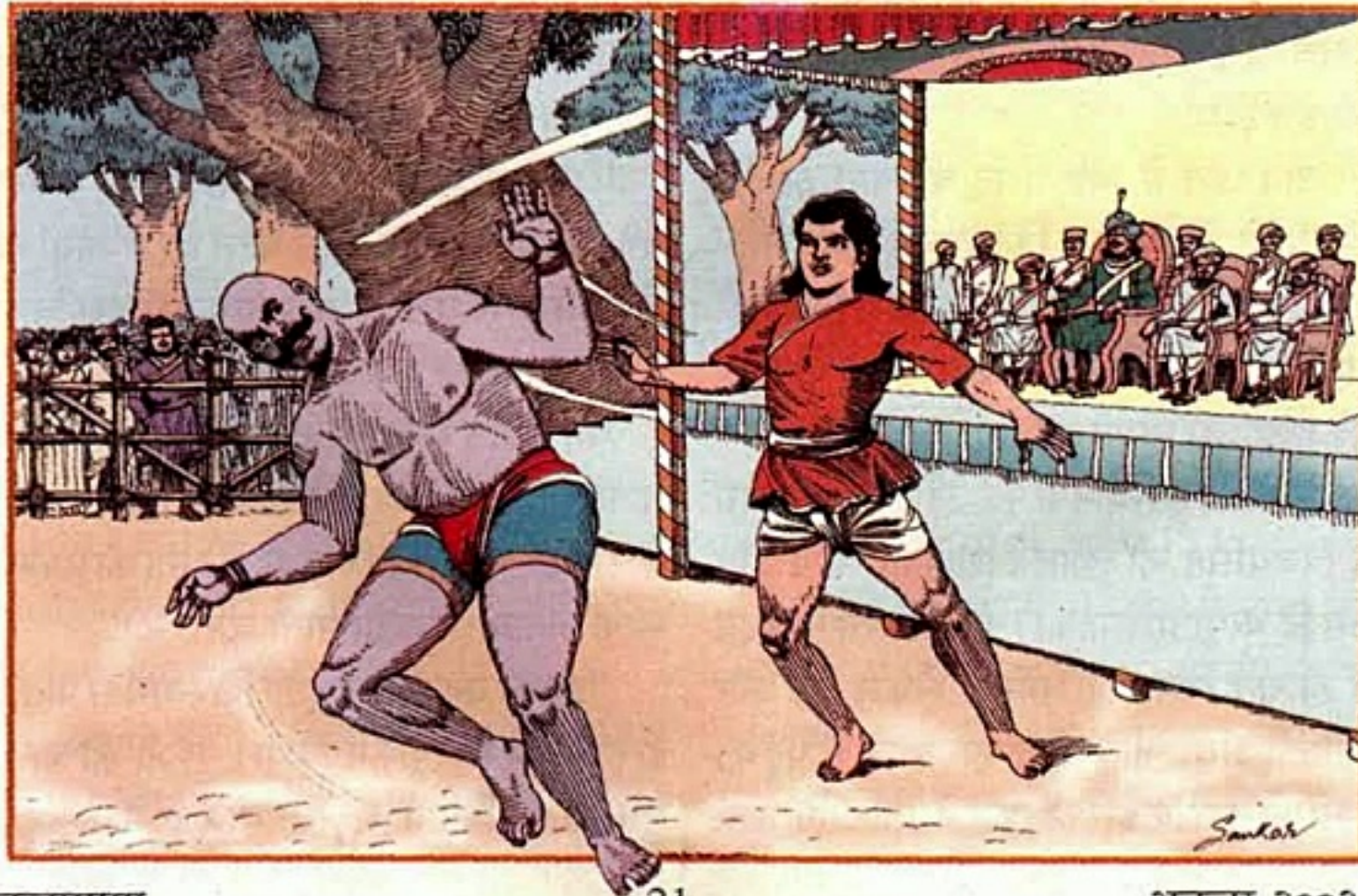
जहाँ मल्लयुद्ध होनेवाला था। वहाँ लोगों की भारी भीड़ थी। ग्रामाधिकारी और गाँव के कुछ प्रमुख व्यक्ति मंच पर आसीन थे। मल्लयुद्ध शुरू हुआ। देखते-देखते त्रिनेत्र ने कितने ही मल्लयोद्धाओं को हरा दिया।

अब अंत में विजयसिंह की बारी आयी। विजयसिंह के प्रहारों से त्रिनेत्र घबरा गया। चार-पाँच मिनटों के अंदर ही विजयसिंह ने त्रिनेत्र को ज़मीन पर उल्टा गिरा दिया और उसके दोनों पैर पकड़कर उसे घुमाने लगा।

लोगों की हर्षध्वनियाँ गूँज उठीं। ग्रामाधिकारी ने विजयसिंह को हज़ार अशर्फ़ियाँ सौंपी और उसकी भरपूर प्रशंसा की। दोनों दोस्तों ने सराय में ही रात बितायी। सबेरे वे निकल पड़े और शामको अंधेरा होते-होते एक जंगल में पहुँचे। दोनों को लगा कि इस अंधकार में और आगे जाना श्रेयस्कर नहीं। इसलिए पास ही के एक वृक्ष के नीचे सो गये।

आधी रात को किसी ने उन्हें थपथपाया तो उन्होंने आँखें खोलीं और देखा कि उनके सामने तीन हृष्ट-पुष्ट व बलिष्ठ लुटेरे खड़े हैं और उनके हाथों में लंबी-लंबी तलवारे हैं। उन्हें देखकर बिना झिझके विजयसिंह ने कठोर स्वर में पूछा, ''कौन हो तुम लोग?''

चोरों में से एक ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''दिखायी नहीं देता? ग्रामाधिकारी ने जो हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं, हमारे सुपुर्द कर दो। नहीं तो हम तुम दोनों के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे,'' तलवार विजयसिंह की गर्दन से सटाते हुए उसने कहा।

बस, विजयसिंह ने चुटकी बजायी और तलवार म्यान से निकालने ही वाला था कि इतने में वह चोर रक्त उगलने लगा और ज़मीन पर उल्टा गिर गया। यह दृश्य देखकर बाक़ी दोनों चोर ''मांत्रिक, मांत्रिक!'' कहकर चिल्लाते हुए भागने लगे। इसपर आश्चर्य प्रकट करते हुए रविवर्मा ने विजयसिंह से पूछा, ''सच बताओ। इस चोर पर तुमने मंत्र का प्रयोग किया था न?''

यह सवाल सुनते ही विजयसिंह हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा, ''माफ करना रवि। इसी पर ही नहीं, बल्कि त्रिनेत्र पर भी मैंने मंत्र का प्रयोग करके अनायास प्रतियोगिता जीत ली।''

''इसका यह मतलब हुआ कि स्वार्थ से प्रेरित होकर तुमने यह कुकर्म किया। गुरुजी की बातें भुला दीं,'' रविवर्मा ने क्रोध-भरे स्वर में कहा।

''मित्र, स्वार्थ क्या है, किन परिस्थितियों में मंत्र शक्ति का प्रयोग करना चाहिए, लगता है, इस विषय में हम दोनों में मतभेद है। पहले हम गाँव लौटेंगे। वहाँ पहुँचने के बाद हमारे बचपन के गुरु विश्वनाथ शास्त्री से इस विषय में उनकी राय पूछेंगे।'' विजयसिंह ने कहा।

रविवर्मा मौन रह गया। दूसरे दिन सूर्योदय के बाद दोनों विश्वनाथ शास्त्री के आश्रम में पहुँचे। वह आश्रम उनके गाँव के पास ही प्रवाहित हो रही नदी के किनारे पर था। उस समय एक वृक्ष के नीचे बैठकर वे तालपत्रों का पठन कर रहे थे।

रविवर्मा और विजयसिंह ने उनके पैर छूकर प्रणाम किया। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा, ''तुम्हारे पिताओं से मुझे मालूम हुआ कि विद्याभ्यास पूरा करके तुम लौटनेवाले हो। गुरु सिद्धेंद्र सकुशल हैं न?''

दोनों ने गुरु सिद्धेंद्र का कुशल समाचार सुनाया और साथ ही उनके हितबोधों के बारे में भी सविस्तार बताया।

तब विश्वनाथ शास्त्री ने कहा, ''सिद्धेंद्र के हितवचन तुम दोनों के जीवन में चिरस्मरणीय हैं।''

रविवर्मा ने तुरंत कहा, ''गुरुवर, दुख की बात तो यह है कि गुरुकुल को छोड़ते ही विजयसिंह ने वे हितवचन भुला दिये। स्वार्थ के वश होकर उसने अपना धर्म भुला दिया।''

उसकी बातों पर विश्वनाथ शास्त्री चकित रह गये और विजयसिंह की ओर ध्यान से देखा।

विजयसिंह ने तब कहा, ''रविवर्मा बताये कि
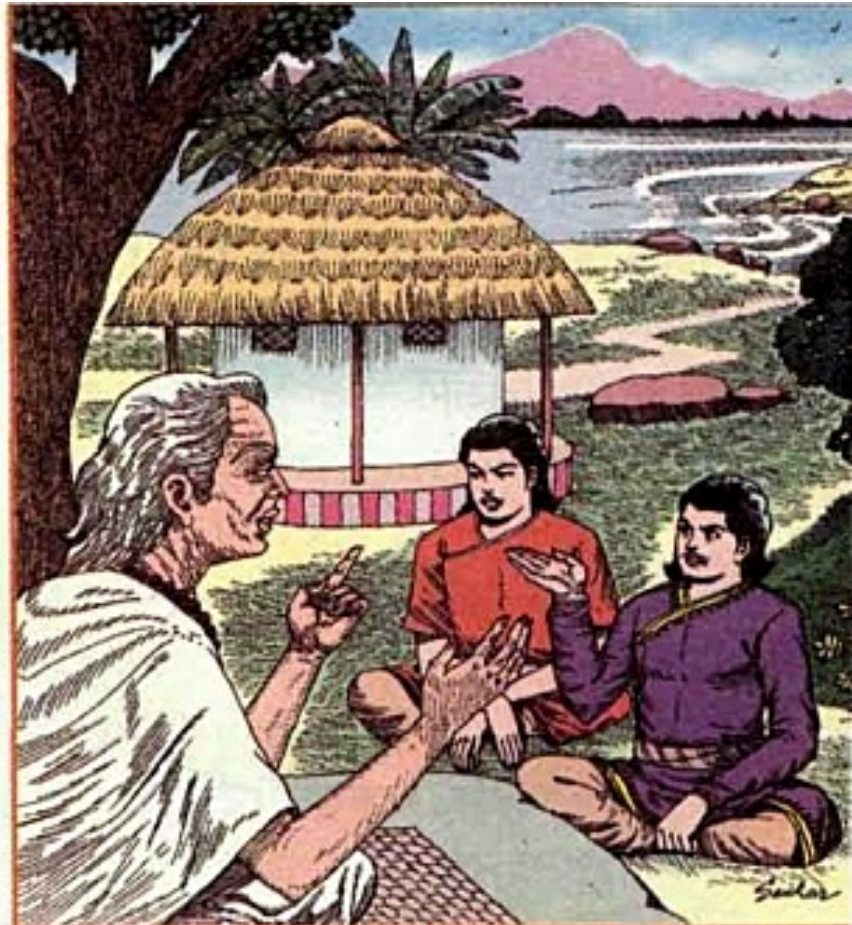
इसमें स्वार्थ क्या है?''

शास्त्री ने जैसे ही सिर हिलाया, रविवर्मा ने कहना शुरू किया, ''स्वार्थ से ही प्रेरित होकर मल्लयोद्धा त्रिनेत्र पर और चोरों पर विजयसिंह ने मंत्र शक्ति का प्रयोग किया। क्या यह उसका स्वार्थ और अधर्म नहीं है? क्या यह गुरु की अवज्ञा नहीं है?''

शास्त्री ने बिना सोचे-विचारे तुरंत कहा, ''वर्मा, मुझे तो नहीं लगता कि इसमें विजय का स्वार्थ है या उसने तुच्छ कार्य किया। सोचने पर तुम्हें सत्य मालूम हो जायेगा।''

वेताल ने इस कहानी को सुनाने के बाद राजा से कहा, ''राजन्, विजयसिंह ने निस्संदेह गुरु के हितवचनों को भुला दिया। धन की आशा में आकर उसने त्रिनेत्र पर और चोरों पर अपनी मंत्र शक्ति का प्रयोग किया। मेरी दृष्टि में यह सरासर

स्वार्थ व अधर्म है। पर विश्वनाथ शास्त्री का यह कहना कि विजय न ही स्वार्थी है न ही अधर्मी, समुचित है? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''विश्वनाथ शास्त्री का यह कहना कि विजय के व्यवहार में न ही स्वार्थ है, न ही अधर्म, समुचित ही लगता है। स्वार्थ की भी अपनी सीमाएँ होती हैं, छूटें होती हैं। मल्लयोद्धा त्रिनेत्र को अपने बल पर गर्व था। उसे मंत्र शक्ति से हराना स्वार्थ नहीं कहलाता। अगर वह इस प्रतियोगिता में भी जीत जाता तो समझ बैठता कि कोई भी मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता। उसका अहंकार दुगुना हो जाता और किसी भी प्रकार का अन्याय व अत्याचार करने पर वह तुल जाता। प्रतियोगिता में उसे हराकर विजयसिंह ने लोगों को इस ख़तरे से बचाया। अब रही लुटेरों की बात। वे लुटेरे कोई भी क्रूर कार्य करने से नहीं हिचकिचाते। हिंसा ही उनका एकमात्र साधन है।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि धन दे देने पर वे उन्हें छोड़ देते। अपने मित्र की भी जान जा सकती थी। विजयसिंह ने इस ख़तरे को भाँप लिया और मंत्र शक्ति का प्रयोग किया। अपने प्राण की रक्षा के लिए शत्रु को मारना कदापि स्वार्थ नहीं कहलाता। अब रही धर्म की बात। सब कालों में, सब स्थितियों में कोई अपरिवर्तनीय धर्म नहीं होता। युग युग में सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार वे धर्मसूत्र बदलते रहते हैं।

यहाँ एक और बात ग़ौर करने लायक़ है। रविवर्मा ने जब विजयसिंह पर यह अभियोग लगाया कि उसने गुरु के हितबोध को भुला दिया तो वह मौन रह गया और उसे अपने गुरु के पास ले आया, क्योंकि उसे मालूम था कि उसका दोस्त उसकी बातों पर विश्वास नहीं करेगा और हमेशा के लिए उसे स्वार्थी व अधर्मी ही समझता रहेगा। विजय ने रविवर्मा से ही बतलवाया कि उसने क्या काम किया। वह उसकी धर्मबुद्धि का सूचक है।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - पवनकुमार की रचना)

भारत की पौराणिक कथाएँ – ६

नेत्रहीन भिक्षु

वर्षा ऋतु का समय था। बुद्ध भगवान एक पहाड़ी श्रृंखला के अधोभाग के एक बाग में शिविर में विश्राम कर रहे थे। वहाँ की अनेक गुफाओं में उनके शिष्य ठहरे हुए थे। यदाकदा दूर-दूर से विद्वान पंडित बुद्ध भगवान के दर्शन करते और उनसे विचार-विमर्श कर दर्शन और धर्म संबंधी अपनी शंकाओं का समाधान करते।

प्रातःकाल वर्षा की थोड़ी सी बौछार के बाद सूर्य की रश्मियाँ चमकने लगी थीं। बुद्ध भगवान अपनी गुफा से निकल कर बाग में सैर का आनन्द ले रहे थे। निकट में ठहरे हुए कुछ आगन्तुकों ने उनका अभिवादन किया। अभिवादन का उत्तर जब बुद्ध दे चुके तब एक आगन्तुक ने कहा, ''हे महान आत्मा ! क्या आप हिंसा की निन्दा नहीं करते?''

''निस्सन्देह, मैं उसे अस्वीकार करता हूँ।'' बुद्ध ने कहा।

''हमें यह देखकर दुख हुआ कि आपके एक शिष्य ने कुछ समय पहले सैकड़ों चींटियों के प्राण ले लिये।'' आगन्तुक ने कहा। ''अब वह शान्ति से ऐसा बैठा है मानों कुछ नहीं हुआ।'' उसने आगे बताया। फिर उसने एक वयोवृद्ध बौद्ध भिक्षु की ओर संकेत किया जो एक शिला पट्टी पर विश्राम कर रहा था।

बुद्ध ने उस वयोवृद्ध पर नजर डाली। ''उसने एक चींटी की भी हत्या नहीं की।'' बुद्ध ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

''महानुभाव, न केवल मैंने, बल्कि मेरे सभी साथियों ने उसे चींटियों को मारते देखा। वह चलते समय अपने पाँवों से उन्हें कुचलता रहा।''

आगन्तुक ने अपनी सत्यता को प्रमाणित करते हुए कहा।

''चींटियाँ अवश्य मर गईं परन्तु उसने उन्हें नहीं मारा?'' बुद्ध ने कहा।

''हम आपका कथन समझ नहीं पा रहे हैं, सच पूछा जाये तो।'' आगन्तुक ने कहा।

''देखो मित्र, जिस व्यक्ति की ओर आप संकेत कर रहे हैं वह बहुत करुणामय है। उसके मन में हिंसा का लेश मात्र भी नहीं है। हो सकता है वह चींटियों की मृत्यु का कारण बना, किन्तु उसने उनकी हत्या नहीं की। वह नेत्रहीन है। चलते समय वह चींटियों को देख नहीं सका। मेरे मित्र ! कार्य नहीं बल्कि कार्य के पीछे की भावना निर्णय करती है कि कार्य निन्दनीय है या नहीं।'' बुद्ध ने समझाया।

आगन्तुकों को बात समझ में आ गई। ''कैसी विडम्बना है कि उसके जैसा करुण-हृदय नेत्रहीन है!'' एक आगन्तुक ने दुख के साथ विचार व्यक्त किया।

''वह अपने पूर्वजन्म के कर्म के कारण नेत्रहीन है। लेकिन नेत्रहीनता के कारण उसके दुख की अवधि अब समाप्त हो गई है। अब वह परम आनन्द की स्थिति में है, यद्यपि वह देख नहीं पाता। उसकी अन्तर्दृष्टि खुल गई है। इसीलिए उसे हमलोग चक्षुपाल कहकर पुकारते हैं - यानी जो आन्तरिक दृष्टि से मार्गदर्शित हो।''

''हे महान आत्मा, उसने पूर्व जन्म में ऐसा क्या कर्म किया था जिससे इस जन्म में अपनी दृष्टि खोनी पड़ी?'' बड़ी उत्सुकता के साथ आगन्तुकों ने पूछा। बुद्ध ने यह उत्तर दिया :

चक्षुपाल अपने पिछले जीवन में निपुण चिकित्सक था। एक दिन उसने एक स्त्री को अपने गन्तव्य की ओर जाते हुए मार्ग में ठोकर खाते देखा। ''क्या कष्ट है आपको?'' चिकित्सक ने पूछा। ''एक अभिशप्त बुखार के कारण मैं नेत्रों की ज्योति खो बैठी।'' स्त्री ने कहा।

''मैं कुछ घरों में काम कर अपना जीवन-निर्वाह कर रहीथी। पर अब नहीं कर सकती। आप मेरे कष्ट का अनुमान कर सकते हैं। जब तक मैं मंदिर तक जाने की सड़क नहीं पकड़ लेती, जहाँ मैं घंटों भीख के लिए खड़ी रहती हूँ, मुझे भूखी रहना पड़ेगा।''

चिकित्सक ने स्त्री को मंदिर की ओर का मार्ग बताते हुए कहा, ''मैं शायद तुम्हारा रोग ठीक कर सकता हूँ।''

''क्या सचमुच? तब मैं आजीवन आपके

घर की सेवा करती रहूँगी।'' खुशी के मारे उछलती स्त्री ने कहा। ''क्या तुम वचन देती हो?'' ''वचन देती हूँ।'' स्त्री ने कहा।

चिकित्सक को घर पर एक परिचारिका की अत्यन्त आवश्यकता थी। उसने उसकी एक मरहम द्वारा चिकित्सा की और वह पूर्ववत देखने लगी।

नेत्रहीन होने से पूर्व स्त्री एक धनी जमीन्दार के घर में काम करती थी। अब ठीक होने के बाद वह चिकित्सक के घर में काम करने की बजाय पुनः पुरानी नौकरी पर जाना चाहती थी। वह चिकित्सक को धोखा देना चाहती थी। ''महोदय, लगता है, आपकी दवा नहीं काम कर पाई। मैं देख नहीं सकती।'' उसने कहा।

चिकित्सक जो बड़े ध्यान से निरीक्षण कर रहा था तुरन्त समझ गया कि स्त्री झूठ बोल रही है। वह क्रोधित हो उठा। ''यह शर्म की बात है कि मेरी दवा व्यर्थ गई। फिर भी, इसे फिर लगा कर देखो, इस बार दवा का असर होता है या नहीं।'' उसने कहा और उसे एक दूसरा मरहम दिया। स्त्री ने इस आशा से की उसकी आँख की रोशनी और साफ हो जायेगी, दूसरी दवा लगा ली। परन्तु आह! उसकी दृष्टि फिर चली गई।

''मेरी दृष्टि चली गई! मेरी दृष्टि चली गई!'' वह चिल्ला पड़ी।

''ओ नीच औरत! तुम्हारी दृष्टि पहले ही जा चुकी थी। मैंने उसे पुनः लाने का प्रयास किया किन्तु कर न सका। बस!'' चिकित्सक ने कहा और स्त्री की बात सुने बिना वह चला गया।

बुद्ध ने कहानी जैसे ही समाप्त की, आगन्तुकों ने पूछा, ''लेकिन चिकित्सक ने स्त्री के विश्वासघात के कारण हीं उसे नेत्र ज्योति का मिला हुआ लाभ उससे वापस ले लिया। इसके लिए उसे क्यों कष्ट झेलना चाहिए।''

''मेरे मित्र! स्त्री ने अपनी मूर्खता के कारण वैसा आचरण किया, लेकिन चिकित्सक ने क्रोध और बदले की भावना से कर्म किया। यह उसका प्रथम पाप था। दूसरा, उसने एक चिकित्सक के पवित्र कर्त्तव्य का उल्लंघन किया। रोगमुक्त करना चिकित्सक का कर्त्तव्य है न कि उसके विपरीत आचरण करना।'' बुद्ध ने समझाया।

''हमलोग समझ गये महाप्रभु! धन्यवाद!'' यह कहकर आगन्तुकों ने विदा ली।
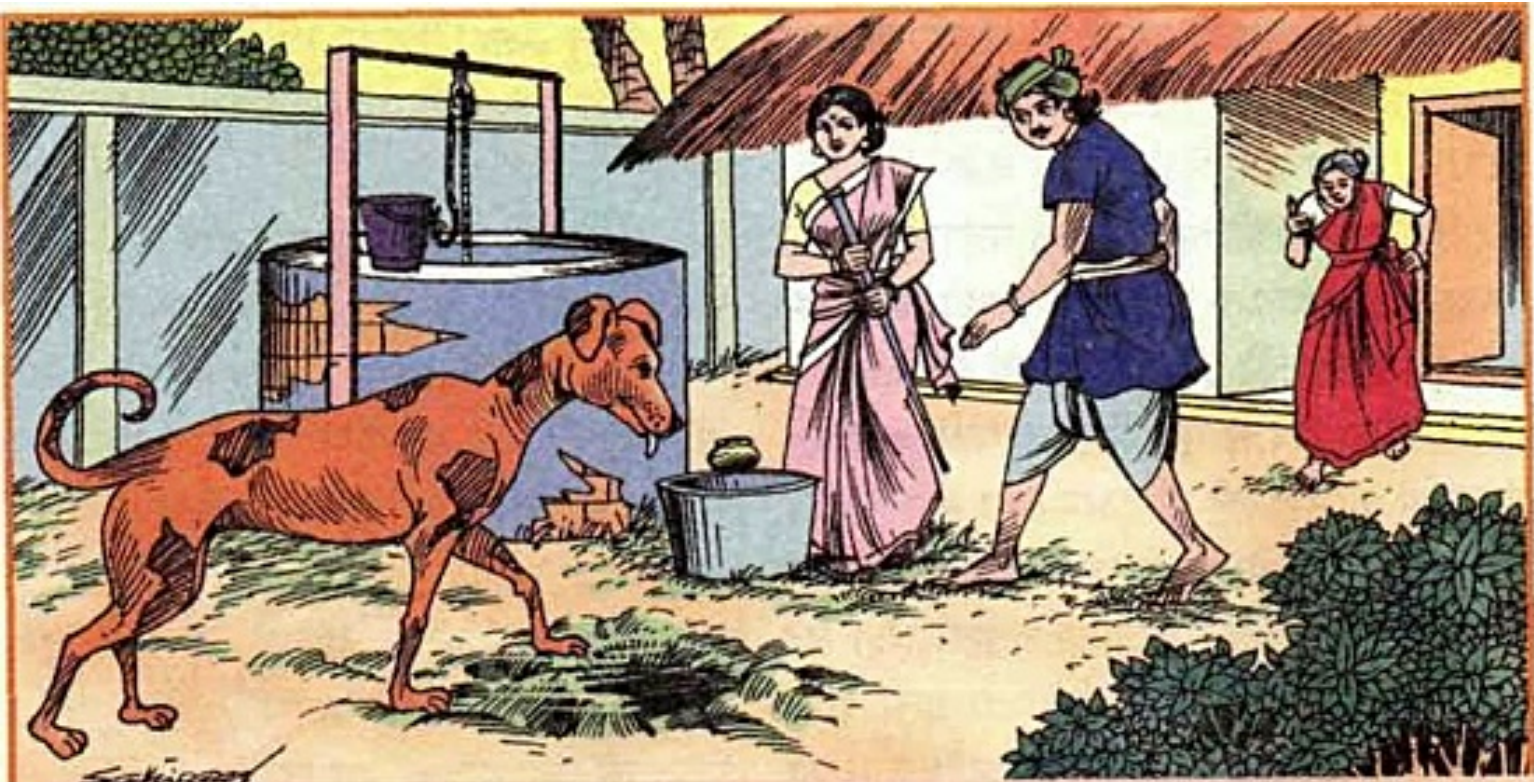
वह चोर नहीं, पर चोर है

चमन और चपल दोनों पड़ोसी हैं। चमन ग़रीब है, पर जितना हो सके, दूसरों की सहायता करना चाहता है। चपल धनी है, पर वह हमेशा यही चाहता है कि कोई भी उससे बेहतर ज़िन्दगी न गुज़ारे।

एक दिन चपल के घर के सामने एक कुत्ता खडे होकर लगातार भोंकने लगा। चपल नाराज़ हो उठा और उसने उसपर पत्थर फेंके। कुत्ता वहाँ से भाग निकला और चमन के घर के सामने खडा होकर भौंकने लगा। चमन को लगा कि कुत्ता भूखा है, इसलिए भौंकता जा रहा है। उसने एक केले के पत्ते में खाना परोसकर उसके सामने रखा। कुत्ते ने खाना खा लिया और कृतज्ञतापूर्वक अपनी पूँछ हिलाने लगा। फिर वह अचानक चमन के घर के पिछवाड़े में गया और अपने नाखूनों से ज़मीन खोदने लगा।

चमन की बूढ़ी माँ ने यह देखा और चमन को वहाँ बुलाकर कहने लगी, ''लगता है, काल भैरव तुमसे बहुत संतुष्ट है। शायद यह कोई संदेश देना चाहता है। वहाँ और खोदना और देखना कि वहाँ क्या है?''

चमन की पत्नी ने भी यह बात सुन ली और वह कुदाल ले आयी। चमन उस जगह को खोदने लगा। पता नहीं, कुत्ता कब वहाँ से खिसक गया। बहुत गहरा खोदने पर चमन को वहाँ काठ की एक पेटी मिली। खोलकर देखा तो उसमें सोने की अशर्फ़ियाँ और एक ताम्बे की पंखुड़ी दिखायी पड़ी। ताम्बे की उस पंखुडी पर उसके दादाने मिलख रखा था कि अगली पीढ़ियों के सुख-संतोष के लिए यहाँ ये अशर्फ़ियाँ छिपाकर रखी गयी हैं।

इसके बाद चमन की हालत में आकाश-पाताल का अंतर हो गया। उसने और चार एकड़ उपजाऊ भूमि खरीद ली। छोटा-सा व्यापार भी शुरू कर

दिया। वह अब आराम से ज़िन्दगी गुज़ारने लगा। परंतु उसके अच्छे स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और नहीं होने दिया।

चमन की यह अच्छी स्थिति चपल से देखी नहीं गयी। उसने तहक़ीकात शुरू कर दी कि चमन के जीवन में अचानक ऐसा कैसे परिवर्तन हो गया। उसे विषय का पता चला गया। वह तुरंत ग्रामाधिकारी से मिला और कहा, ''महोदय, भूमि के अंदर जो भी मिलता है, वह राजा का होता है। चमन को अपने पिछवाड़े में सोने की अशर्फ़ियाँ मिली हैं और उन्हें अपना समझकर मौज़ उड़ा रहा है।''

ग्रामाधिकारी ने भी इस संबंध में तहक़ीकात की। विषय की पूरी जानकारी के बाद उसने चपल को बुलाया और कहा, ''चमन के दादा ने ताम्बे की पंखुडी पर वसीयत लिखी थी। उन्होंने अपना सोना वारिसों को दिया। इसलिए यह सोना चमन का ही है। तुमने अनावश्यक ही ग़लत समझा और उसपर दोषारोपण किया।''

ग्रामाधिकारी के इस फ़ैसले को सुनने के बाद चपल और ईर्ष्यालु हो उठा। तब जाकर उसे कुत्ते की याद आयी। उसे याद आया कि उस दिन जब कुत्ता भोंक रहा था, तब उसने उसे पत्थरों से मारा और भगाया। वह चमन की तरह भाँप नहीं पाया कि वह कुत्ता महिमावान कुत्ता है। पहले वह कुत्ता उसी के घर के सामने खड़े होकर भोंक रहा था, तो इसका यह मतलब हुआ कि उसके घर के पिछवाडे में भी धन-राशि है, खज़ाना है। भला कैसे मालूम हो कि अब वह कुत्ता कहाँ है।

चपल उस महिमावान कुत्ते की खोज में लग गया। केले के पत्ते में खाना परोसकर वह कुत्ते का
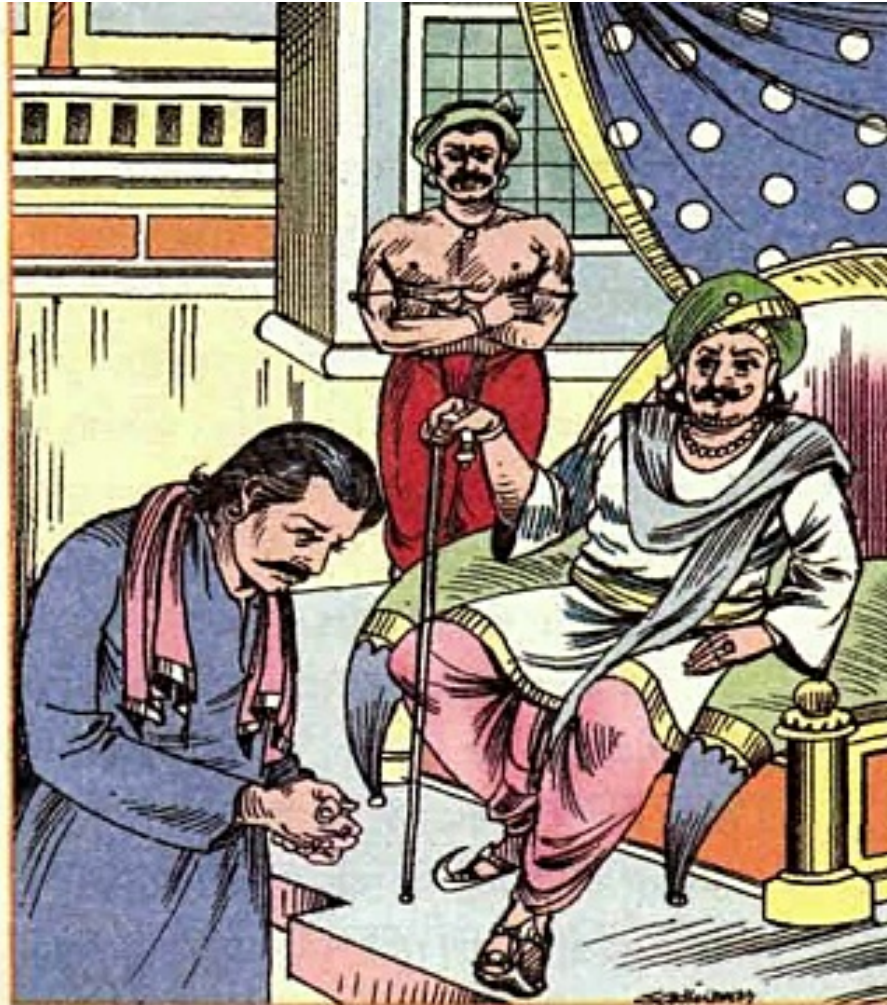
बैचेनी से इंतज़ार करने लगा। शायद सब कुत्तों को पता था कि वह कितना बडा कंजूस है, इसलिए कोई भी कुत्ता उस तरफ़ आया ही नहीं। फिर भी चपल बडी ही सहनशक्ति के साथ कुत्ते की प्रतीक्षा में था।

एक हफ़्ते के बाद एक कुत्ता चपल के घर के सामने खड़े होकर लगातार भोंकने लगा। उसने उस कुत्ते को देखकर पहचान लिया कि यह वही कुत्ता है, जिसे उसने पत्थरों से मारकर भगाया था। उसने तुरंत उसे खाना खिलाया। खाना खा चुकने के बाद वह कुत्ता अचानक उसके घर के पिछवाड़े में गया और मिट्टी खोदने लगा। वहाँ चपल को काठ की एक पेटी मिली। उसमें रत्न व मोती थे। वज्रों का एक हार व सोने के चार कंगन भी उसमें थे। ताम्बे की पंखुडी के लिए उसने उस पेटी में बहुत ढूँढा, पर उसे ऐसी कोई चीज़ उसमें दिखायी नहीं पडी। परंतु उसने दादा के नाम

पर एक ताम्बे की पंखुडी तैयार कर ली, जिससे भविष्य में इस संबंध में कोई समस्य उठ खड़ी हो जाए।

अच्छे लोग, जो है, उसका सही उपयोग करते हैं और सुखी रहते हैं। पर बुरे लोग अपना वैभव दूसरों को दिखाने में आनंद पाते हैं। उस दिन से चपल के के परिवार के सबके सब लोग गहने पहनने लगे। चपल की पत्नी वज्रों के हार को पहनकर अपनी खुशनसीबी पर इठलाने लगी।

उस समय उस देश का राजा बहुरुपिया बनकर देशभर में घूम-फिर रहा था। वह उस गाँव में भी आया। मंदिर में चपल की पहनी के गले में वज्र के उस हार को देखकर वह चकित रह गया। वह हार उसके पूर्वजों का था। सूर्यास्त के समय उद्यानवन में अकेली घूमती हुई उसकी दादी को किसी चोर ने मार ड़ाला और उसके गहरे चुराकर भाग गया। राजा के दादा ने वज्र के उस हार का नमूना बनवाया और देश भर में उसे प्रदर्शित करवाया, इस उद्देश्य से कि शायद चोर पकड़ा जाए। पर चोर का पता नहीं चला। राजा के दादा इसी शोक में मर गये। राजा के पिता ने यह नमूना अपने पास रखा और चोर को पकड़ने की यथासंभव कोशिशें कीं। फिर यह जिम्मेदारी राजा को सौंपी। अब राजा के पास यह नमूना मौजूद है।

राजा ग्रामाधिकारी से मिला। अपनी असली रूप प्रकट किया और पूरी बात बतायी। यहाँ-वहाँ तहक़ीकात करने के बाद राजा को इसका विश्वास हो गया कि चपल का दादा ही चोर है। यह तथ्य चपल के दादा के तांबे की पंखुडी पर लिखा वसीयतनामा भी पुष्ट करता है। राजा ने चपल को बुलाकर कहा, ''देखो, तुम अपने दादा के वारिस हो। उस दुष्ट ने जो काम किया, उसके लिए तुम्हें सज़ा भुगतनी होगी। तभी जाकर मेरे पूर्वजों की आत्माओं को शांति मिलेगी। तुम्हें एक साल तक जेल में रहना होगा।''

अब चपल को मालूम हो आया कि उससे कितनी बड़ी भूल हो गयी। उसने वे सारे गहने व धन-राशि राजा के सुपुर्द कर दिये। घर के पिछवाडे में जो निधि मिली, वह उसे राजा को सौंपनी थी। सावधानी बरतने के उद्देश्य से उसने जान-बूझकर ताम्बे की पंखुडी की सृष्टि की और खुद आफ़त में फंस गया। चोर न होते हुए भी चोर बन गया। वह अपने आप कहने लगा कि मुझ जैसे लालची और लोभी को सही सज़ा मिली।

चूहों की चर्चा

यदि आप राजस्थान में करनी देवी के मंदिर में दर्शन करने जा रहे हैं तो चूहेदानियों को पीछे छोड़ जायें। देशनोक ग्राम के इस मंदिर में चूहों का सम्मान किया जाता है, उन्हें खिलाया जाता है और उनकी रक्षा की जाती है। वे झुण्ड के झुण्ड वहाँ भरे रहते हैं जहाँ स्थानीय लोग उनकी रक्षा करते हैं। उनका विश्वास है कि चूहों में मानव आत्माएँ कुछ समय के लिए तब तक निवास करती हैं जब तक उनके लिए मानव शरीर तैयार नहीं हो जाता।

एक स्थानीय जनश्रुति के अनुसार सैकड़ों वर्ष पहले देशनोक में करनी देवी नाम की एक संन्यासिनी थी। अपनी चामात्कारिक शक्ति के लिए वह विख्यात थी। ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक बच्चे की मृत्यु हो जाने पर उसने भगवान से उसके जीवन के लिए प्रार्थना की। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली, किन्तु बालक तुरंत पुनर्जीवित नहीं हो सका, क्योंकि उस समय सुयोग्य मानव शरीर उपलब्ध नहीं था। इसलिए जब तक उसकी आत्मा के लिए मानव शरीर उपलब्ध नहीं हुआ वह चूहे के रूप में जन्मा। तब से देशनोक निवासियों के लिए चूहे प्रिय हैं। करनी देवी का मंदिर आज भी चूहों के लिए सुखद-सुरक्षित स्थान है।

मधुर वाची

तेलुगु भाषी इसे सुनकर फूले न समायेंगे। उनकी मातृ भाषा संसार की ऐसी केवल दो भाषाओं में से एक है जिनकी अनोखी विशेषता यह है कि इनके प्रत्येक शब्द के अन्त में स्वर होता है। और दूसरी भाषा कौनसी है जिसमें यह विशेषता है? इतालवी !

भूतों की दावत

गंगा झगड़ालू व कर्कश औरत के नाम से अपने गाँव में मशहूर थी। पति के मर जाने के बाद जीविका के लिए उसे रसोई बनाने का सहारा लेना पड़ा।

गाँव भर के लोग कहा करते थे कि उसकी रसोई बड़ी ही स्वादिष्ट होती है। इसलिए झगड़ालू होते हुए भी शुभ कार्यों के अवसरों पर रसोई के काम के लिए लोग उसे ही बुलाया करते थे।

एक दिन रात को गंगा जब सो रही थी तो उसे लगा कि कोई उसकी पीठ थपथपा रहा है। वह जाग उठी। उसने देखा कि सामने तीन नाटे भूत हैं। उन्हें देखते ही डर के मारे वह चिल्ला उठी।

भूतों ने उससे कहा, ''देखो गंगा, हम तुम्हारा अहित करने नहीं आये हैं। चिल्लाती रहोगी तो अग़ल-बग़ल के लोग जाग जायेंगे। डरना मत। आज इतवार है। अमावास्या का पर्व दिन है। श्मशान में रसोई पकाने के लिए हमने सब तैयारियाँ कर लीं। तुम बरतन लेकर चलो।''

''मेरी तबीयत ठीक नहीं है। किसी और से यह काम करा लेना,'' गंगा ने कहा। उसके इस जवाब से भूतों की आँखें लाल हो गईं। बड़े कठोर स्वर में उन तीनों भूतों ने हुक्म जारी करते हुए कहा, ''तुम बहाने बनाओगी तो तुम्हें आग में फेंक देंगे और बोटी-बोटी चबा जायेंगे। चलो, चुपचाप हमारे पीछे-पीछे श्मशान आ जाओ।'' कहते हुए तीनों भूत चमगादड़ बन गये और खिड़कियों में से निकलकर अंधकार में उड़ गये।

दूसरा कोई और चारा नहीं रहा। गंगा ने बरतन एक थैली में डाल लिये और घर से निकल पड़ी।

- अनिल गर्ग -

गाँव के बाहर आने के बाद वह एक उजड़े घर के चबूतरे पर बैठ गयी और सोचने लगी कि इस आफ़त से कैसे बचें। उस समय एक पथिक उस रास्ते से गुज़र रहा था। उसे उस हालत में देखकर वह पास आया और पूछा, ''कौन हो तुम? इस समय चबूतरे पर बैठकर रो क्यों रही हो?''

गंगा ने पूरा विषय पथिक को बताया। पथिक ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, ''माँ, मेरा नाम शिव है। पड़ोसी ज़मींदार की बेटी की शादी पर रसोई का काम संभालने गया था और वहीं से लौट रहा हूँ। तुम्हारे बदले मैं चला जाऊँगा और भूतों की दावत का आवश्यक इंतज़ाम कर दूँगा। तुम्हें मंजूर है?''

''इससे बढ़कर मुझे और क्या चाहिए बेटे,'' कहते हुए उसने बरतनों से भरी थैली उसके सिर पर रख दी और कहा, ''गाँव के बीचोंबीच बरगद का जो पेड़ है, उसी के बगल में है मेरा घर। सामग्री कल सबेरे अवश्य घर पहुँचा देना।'' कहकर पीछे मुड़े बिना जल्दी-जल्दी चली गयी।

शिव जब श्मशान पहुँचा तब तीनों नाटे भूत एक टीले पर बैठकर आपस में बातें कर रहे थे। शिव को देखते ही वे चिल्ला पड़े। ''अरे छोकरे, तुम कौन हो? वह गंगा कहाँ है?''

शिव ने निर्भीक होकर कहा, ''गंगा पर अकस्मात् भूत सवार हो गया। उसने यह थैली मेरे सिर पर रखी और यह कहती हुई गाँव की सीमा के पार भाग गयी - आ रही हूँ, जटाओंवाली माँ, आ रही हूँ।'' फिर शिव रसोई बनाने के काम में लग गया। भूत उसे आवश्यक सामग्री देते गये।

घंटे के अंदर ही शिव ने रसोई का काम पूरा कर दिया। उसकी पकायी मुर्गी, शिंगा, ज्वार की रोटियाँ खाकर भूत बहुत संतुष्ट हुए। बाद में भूतों ने बरगद के कोटर से चमड़े की एक थैली निकाली और शिव को दिया। पौ फटने के पहले वे कबूतर बनकर उड़ गये।

उनके चले जाने के बाद शिव ने थैली खोलकर देखी। उसमें सोने की सौ अशर्फ़ियाँ थीं। बरतनों की थैली लेकर जब वह गंगा के घर पहुँचा तब वह घर के सामने झाड़ू दे रही थी।

शिव ने जो हुआ, सब कुछ उससे बताया और कहा, ''भूतों ने सोने की जो अशर्फ़ियाँ दीं, उनमें से आधी तुम्हें देता हूँ।'' कहते हुए वह थैली खोलने लगा।

गंगा ने फ़ौरन वह थैली खींच ली और कहा, ''इसमें से आधा ही मुझे दोगे? सोचो, ये सोने की अशर्फ़ियाँ तुम्हें कैसे मिलीं? मैंने ही तुम्हें भूतों के पास भेजा, नहीं तो क्या ये तुम्हें मिलतीं? वहाँ तुमने जो खराब रसोई बनायी होगी, उसके लिए इतना काफ़ी है,'' कहती हुई उसने एक अशर्फ़ी उसके हाथ में थमा दी।

पड़ोसी परमेश इस चिल्लाहट से तंग आकर बोला, ''तुम दोनों के झगड़े का निपटारा ग्रामाधिकारी ही कर सकते हैं। चलो तुम दोनों मेरे साथ,'' कहते हुए वह उन दोनों को ग्रामाधिकारी के पास ले गया।

ग्रामाधिकारी ने पूरा विवरण जानने के बाद कहा, ''हाँ, ये अशर्फ़ियाँ गंगा को ही मिलनी चाहिए।'' कहते हुए परमेश के हाथ में रखी थैली उसने गंगा को दे दी।

शिव ने दुखी होकर ग्रामाधिकारी से कहा, ''गंगा के झगड़ालू स्वभाव से डरकर आपने मेरे साथ अन्याय किया, क्योंकि आख़िर मैं किसी और गाँव का ठहरा न !''

इस पर ग्रामाधिकारी ने हँसते हुए कहा, ''जल्दबाजी मत करो।'' फिर उसने गंगा की ओर मुड़कर कहा, ''गंगा, तुमने ही दूसरे गाँव के इस शिव को भूतों के पास भेजा था। इसलिए यह थैली तुम्हारी हुई। उसी हिसाब से चूँकि परमेश तुम्हें मेरे पास ले आया, है, यह थैली उसी की होगी न? मेरी यह बात मानती हो या नहीं?''

गंगा इसका जवाब नहीं दे पायी। उसने परमेश से और शिव से माफ़ी माँगी। तब ग्रामाधिकारी ने कहा, ''जो मुँह में आया, बक जाओ, यह न्याय नहीं हो जाता गंगा।'' उसे फिर डांटा और अशर्फ़ियों की थैली शिव को सौंपते हुए उसने कहा, ''तुम्हें न्यायपूर्वक जो मिलना चाहिए, ले लो और बाक़ी उसे दे दो।''

शिव ने कहा, ''इसने रसोई के लिए आवश्यक बरतन दिये। इसके लिए मैं आधी अशर्फ़ियाँ इसे देता हूँ और आधी मैं लेता हूँ।'' कहते हुए उसने आधी अशर्फ़ियाँ गंगा को दे दीं।

गंगा शर्म के मारे सिर झुकाकर वहाँ से चुपचाप चलती बनी।

उत्तम कवि

वर्धन कुंतल देश का राजा था। कवियों और पंडितों का आदर-सम्मान करता था। वह स्वयं कवि था इसलिए दूसरे कवियों की कविताओं के गुण-दोष स्वयं परख पाता था। और तदनुसार वह निर्णय लेता था।

सालों भर कवियों के सम्मान का उसका कार्यक्रम चलता रहता था। अलावा इसके, उसकी एक और आदत थी। नवरात्रि उत्सवों के अवसर पर हर साल वह सरस्वती पूजा धूमधाम के साथ किया करता था। उस समय जो नये कवि उसके पास आते थे, वह उनके काव्यों को पढ़ता था। जो काव्य उसे सबसे अच्छा लगता था, विजयदशमी के दिन उसे पुरस्कार देता था। उस काव्य के रचयिता का सम्मान भी उस दिन होता था। कभी-कभी उत्तम काव्य का रचयिता आस्थान कवि के पद पर भी नियुक्त किया जाता था।

एक साल सरस्वती पूजा के दिनों दो कवियों के काव्य उत्तम काव्यों के रूप में चुने गये। वे दो कवि थे रामशर्मा और कृष्णशास्त्री। राजा के साथ-साथ और पंडित भी उन दोनों काव्यों के गुण-दोषों को परख रहे थे। पंडितों ने अपना अंतिम निर्णय सुनाते हुए कहा, ''लगता है कि रामशर्मा का काव्य कृष्ण शास्त्री के काव्य से बेहतर है। हम मानते हैं कि कृष्णशास्त्री के काव्य में कहीं-कहीं मिठास है, मधुरिमा है, लालित्य है पर उसमें व्याकरण दोष हैं और चंद पक्तियाँ भी नीरस हैं। परंतु रामशर्मा का काव्य इससे भिन्न

- चंद्रकांत पांडे -

है। आदि से लेकर अंत तक उसमें समरसता है, माधुर्य है। अतः रामशर्मा को ही इस वर्ष का उत्तम कवि माना जाना चाहिए। उसके काव्य को पुरस्कार मिलना चाहिए।''

पर राजा वर्धन ने उनके अभिप्राय को अस्वीकार करते हुए मुस्कुराते हुए कहा, ''जब आप लोग काव्य पढ़ते हैं तब आपको चाहिए कि आप कवि की जीवन-पद्धतियों को भी दृष्टि में रखें। उसके पुराने और आधुनिक जीवन इतिहास भी जानें। राजकर्मचारियों के द्वारा इन दोनों कवियों के बारे में आवश्यक जानकारी मिली। रामशर्मा अत्यधिक शिक्षित हैं और धनी भी। अब भी वे एक ज़मींदार के संरक्षण में हैं। उनका गाँव हरा-भरा है। अच्छी फसलों से अति सुंदर दिखता है। हर प्रकार की सुविधा उन्हें प्राप्त है। इतना ही लिख पाये, इसका यह मतलब हुआ कि कविता रचने की उनकी पटुता सीमित है। अब रही कृष्णशास्त्री की बात। वह एक साधारण किसान है। उसकी शिक्षा अधूरी कही जा सकती है। वह अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए हर दिन मेहनत करता है। उसके गाँव की जमीन उपजाऊ नहीं है। अधिकाधिक मेहनत करने पर ही थोड़ा-बहुत मिलता है। फिर भी उसने मधुर व रसीली कविताएँ रचीं। इसका कारण है, उसके अंतराल में निहित भाव-समूह। उसकी जीवन-शैली पर्वत की तरह कठोर है, फिर भी उसके हृदय को चीरकर ये कविताएँ फूट पड़ी हैं। ऐसे व्यक्ति को हम सुख और सुविधाओं का प्रबंध करें तो वह अद्भुत कविताओं की सृष्टि करेगा। अमर काव्य रचेगा। अब आप लोग बताइये कि इनमें से हम किसे उत्तम कवि मानें। रामशर्मा को या कृष्णशास्त्री को।''

राजा की बातों को सुन चुकने के बाद पंडितों को अपनी ग़लती महसूस हुई। उन्होंने मुक्तकंठ से घोषणा की, ''कृष्णशास्त्री उत्तम कवि है।''

राजा वर्धन ने कृष्णशास्त्री का सम्मान किया। उसे उत्तम कवि घोषित किया और आस्थान कवि के पद पर नियुक्त किया।

विडालवंशी आगन्तुक

ब्राजील की राजधानी रियो दि जैनिरो के एक होटल में ऐसे ग्राहक आते हैं जो प्रायः अग्रिम रूप से अपनी मेजें आरक्षित करा लेते हैं। वहाँ से गुजरते हुए पर्यटक भी जल्दबाजी में कुछ खाने-पीने के लिए टपक पड़ते हैं। जो भी हो, अगस्त में एक दिन होटल में दो अनपेक्षित आगन्तुक घुस पड़े। उन्हें अन्दर आते और मेजों के चारों ओर मंडराते देखकर ग्राहक और परिचारिकाएँ भय के मारे चीखने-चिल्लाने लगीं। इससे आगन्तुक कुछ देर तक उत्तेजित नहीं हुए। बाद में उन्होंने विरोध किया और शीशे का एक दरवाजा तोड़ दिया और मेजपोशों को उठाकर उनपर रखे चीनी बर्तनों को उलट पलट दिया। तब तक होटल मैनेजर ने स्थानीय पर्यावरण एजेन्सी को सावधान कर दिया था, जिसके स्वयंसेवकों ने किसी तरह उन्हें अपने साथ लाये पिंजड़ों में घुसने के लिए मना लिया। आगन्तुक जगुआर थे।

श्वानीय उपभोग के लिए

यदि तुम जापान जाने के लिए विचार कर रहे हो तो अकाजी न्यूगो द्वारा निर्मित आइसक्रीम की टोह करना। कम्पनी ने आइसक्रीम की अनेक किस्में विकसित की हैं, विशेषकर - साँस ले लो - श्वानों के लिए। इसके ब्राण्ड का नाम नहीं है लेकिन कप पर 'डौगीज़ आइसक्रीम' लिखा हुआ है। आम तरह की आइसक्रीम में लैक्टोज होता है, जिसे निर्माणकर्त्ताओं के अनुसार, कुत्ते नहीं पचा सकते। जापानी किस्म में लैक्टोज़ नहीं होता।

जो भी हो, कम्पनी का आश्वासन है कि डौगीज़ आइसक्रीम को सुरक्षित रूप से मनुष्य भी खा सकते हैं। यह किस्म मीठी नहीं होती। इसलिए कम्पनी कहती है कि इसे मधुमेह के रोगियों के लिए निर्धारित की जा सकती है। फिर भी, लोग शायद इसे खाने में कतरायें, क्योंकि आइसक्रीम का ३.३ औंस का एक कप १५ डॉलर्स यानी ७५० रु. मूल्य का है।

मध्यप्रदेश की एक लोक कथा

मध्यप्रदेश जैसा कि नाम से संकेत मिलता है भारत के मध्य में स्थित है। यह खनिज-सम्पन्न राज्य प्राकृतिक संसाधनों और वन्य-जीवन से भी समृद्ध है।

मध्य प्रदेश मुख्यतः विन्ध्य और सतपुरा पर्वतमालाओं से घिरा हुआ पठार है। मुख्य नदी प्रणालियाँ जैसे नर्मदा, ताप्ती, चम्बल, सोन, महानदी तथा इन्द्रावती इन्हीं पर्वतमालाओं से निकलती हैं और राज्य में बहती हुई उसे एक बहुत बड़ी सुषमा का प्राकृतिक विन्यास प्रदान करती हैं।

अनेक रजवाड़ों के राज अब मध्य प्रदेश के अंग हैं। सन् १८२० के बाद इस क्षेत्र पर ब्रिटिश का अधिकार हो गया और यह केंद्रीय प्रान्त कहा जाने लगा। मध्यप्रदेश भारतीय राज्य के रूप में सन् १९५६ में अस्तित्व में आया। छत्तीसगढ़ का नया राज्य इसी क्षेत्र में से सन् २००१ में बनाया गया।

मध्यप्रदेश का क्षेत्रफल ३०८००० वर्ग कि.मी. और जनसंख्या ६०,३८५,११८ है। हिन्दी यहाँ के जन साधारण द्वारा सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है। यहाँ की राजधानी भोपाल है। मध्यप्रदेश को प्रायः आदिवासी राज्य कहा जाता है। यह अनेक भारतीय आदिवासियों का आवास स्थान है। इनमें से मुख्य हैं - गोंड, भील, ओरांव, ढंका, धनगद, पनिका, सहरिया।

सिंही-सूरवा और पाली-बिरवा

अनेक धुंधली शताब्दी पूर्व इस क्षेत्र में, जिसे आज मध्यप्रदेश कहते हैं, दो बड़े राज्य थे। दोनों राजा गोंड आदिवासी थे। उनमें से एक पर सिंही नाम का एक बहादुर राजा राज्य करता था। उसके अधिकार में अनेक जादुई शक्तियाँ थीं।

गोंड लोग अभी भी वीर सिंही अथवा सिंही सूरवा की प्रशंसा का गाथागान करते हैं। एक अन्य शक्तिशाली गोंड राज्य था। बरार जिस पर राजा

भोगीबिला चन्दा नामक एक शानदार किला से राज करता था।

सिंही-सूरवा का एक छोटा बेटा था जिसका नाम था पाली। बचपन से ही उसमें असाधारण शक्ति के लक्षण दिखाई पड़ते थे। और जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, उसने अनेक शारीरिक दक्षताएँ उपलब्ध कर लीं। सिंही और उसकी रानी को अपने पुत्र पर गर्व था। जब पाली पाँच वर्ष का हुआ तो सिंही ने पाली के योग्य दुल्हन देखना शुरू कर दिया। ''उसे असाधारण होना ही चाहिए,'' वह प्रायः रानी से कहा करता था। ''हमारे पाली के लिए साधारण राजकुमारी से काम नहीं चलेगा।''

राजा के आदमियों ने उसे बरार के राजा भोगीबिला की बेटी बेबी गैला के मंत्रमुग्ध कर देनेवाले आचरण के बारे में बताया। सिंही सूरवा मोहित हो गया और उसने स्वयं बरार के राजा के पास जाकर विवाह का प्रस्ताव रखने का निश्चय किया।

उसने अपने महान अश्व हंसधर पर सवारी की और बरार की ओर चल पड़ा। हंसधर साधारण घोड़ा नहीं था। वह केवल बलशाली, विश्वासपात्र

और निर्भीक ही नहीं था, बल्कि उसमें अलौकिक शक्तियाँ थीं। वह आसमान में उड़ सकता था और बोल भी सकता था।

चन्दा क़िला के ठीक बाहर, राजा भोगीबिला के शाही बाग में राजा से मिलने से पहले सिंही

इतिहास

मध्यप्रदेश का इतिहास लम्बा और समृद्ध है। अशोक ने मध्यप्रदेश के उज्जैन में अपनी जिन्दगी की शुरुआत की। सन् ३२० से सन् ५५० तक यह गुप्त साम्राज्य का अंश था। सातवीं शताब्दी में यह राजा हर्षवर्द्धन के साम्राज्य का भाग था। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुसलमानों ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक यह मुगल साम्राज्य का अंग था। मराठों ने इस क्षेत्र पर कुछ समय के लिए राज्य किया, जिनसे लेकर बाद में अंग्रेजों ने उसे अपने अधिकार में कर लिया। कुछ महान नारी शासकों जैसे- इन्दौर की रानी अहिल्याबाई होल्कर, रानी दुर्गावती तथा रानी कमला देवी ने राज्य के इतिहास में बहुत यश कमाया।

अपने को तरोताजा करने के लिए रुका। लेकिन जब वह रात में सो रहा था, तब हंसधर की प्रचुर जिन्दादिली अनियंत्रित उल्लासपूर्ण उछल-कूद में फूट पड़ी और उसने बाग के बहुत पौधे नष्ट कर दिये। अगली सुबह जब भोगीबिला को यह बताया गया, तब वह गरज पड़ा, ''यह घुड़सवार कौन है, जिसने मेरे बाग को नष्ट करने का दुस्साहस किया है।'' उसने अपने सिपाहियों को सिंही-सूरवा को पकड़ने के लिए भेजा।

उन सिपाहियों ने सोते हुए राजा को जगाने के लिए थपथपाया। राजा अर्द्धनिद्रा में जंभाते हुए बुदबुदाया, ''मैं पाली नगरी का राजा सिंही हूँ। मैं राजा की बेटी के साथ अपने बेटे के विवाह का प्रस्ताव लेकर राजा से मिलने आया हूँ।'' और वह फिर सो गया। जब आदमियों ने राजा भोगीबिला को यह बताया तो प्रस्ताव के विचार को टालते हुए उसने गरज कर कहा, ''मेरी बेटी भिखारी राजकुमार से शादी नहीं करेगी। सेना को तैयार करो और मेरे बाग में उस मूर्ख को सन्देश भेज दो। अब से एक सप्ताह में हम उसपर आक्रमण करेंगे।''

लेकिन जब राजा के आदमियों ने सिंही को संदेश दिया, तब ऐसा लगा कि उसने परवाह नहीं की। वह पूरा सप्ताह सोया रहा और जब भोगीबिला की सेना आठवे दिन पहुँच गई तभी उठा। उसने अपनी सहायता के लिए अलौकिक शक्तियों का आवाहन किया। शीघ्र ही वहाँ पिशाचिनियाँ, बेताल, राक्षस, चमगादड़, मधुमक्खियाँ और जंगली जानवर प्रकट हो गये। दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ।

बरार की सेना का पूरी तरह नाश हो गया।

कला और हस्तकला

मध्य प्रदेश साड़ी की महीन बुनाई के लिए प्रसिद्ध है। सूती और रेशमी साड़ियों में चन्देरी और महेश्वरी साड़ियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं। महेश्वरी साड़ियाँ, अधिकांशतः सूती और रेशमी, सरल रूपरेखा और रंग सम्मिश्रण के लिए विशेष रूप से जानी जाती हैं।

लोक आभूषण जो अधिकांशतः कौडी, मनका और पंख के बने होते हैं आदिवासी वेशभूषा के अंग होते हैं और ये बहुत लोकप्रिय हैं। ये उच्च कोटि के कलात्मक होते हैं और सबसे पृथक होते हैं।

स्वर्ण, चाँदी, कांसा तथा अन्य मिश्रित धातुओं के आभूषण भी यहाँ बनाये जाते हैं। धातु की सजावटी पेटियाँ, लैम्प, चावल के कटोरे तथा लघु मूर्तियाँ भी राज्य की कुछ अन्य प्रमुख हस्तकलाएँ हैं। ग्वालियर और भोपाल में निर्मित कपड़े की गुड़ियों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। अनेक आदिवासियों द्वारा चित्रित पिथोरा और लिपाई जैसी लोक भीत्ति चित्रकला शैली बहुत प्रसिद्ध है।

और सिंही की अलौकिक सेना अपना काम कर अदृश्य हो गई। अब भोगीबिला सिंही के साथ एकल युद्ध के लिए स्वयं आया। पूरी तरह तरोताज़ा होकर अपने विश्वासपात्र अश्व पर सवार हो सिंही ने प्रहार किया। दोनों कई दिनों तक लड़ते रहे। परन्तु हाय ! एक दिन हंसधर लड़खड़ा गया और झुक गया और सिंही गिर पड़ा। वह एक गड्ढे में जा गिरा जो गुप्त रूप से राजा के आदमियों ने रात में खोद दिया था।

भोगीबिला का विजय-नाद चन्दा क़िला के प्राचीरों में गूँज उठा। राज्य के हरेक गोंड ने इसे सुना और खुशी मनाई। सिंही को घसीट कर महल के एक अंधेरे कमरे में फेंक दिया गया जहाँ न रोशनी थी, न अन्न-जल।

हंसधर ने अपने मालिक को ले जाये जाते हुए देखा और उसने घसीट कर ले जानेवाले आदमियों को रोका। लेकिन उसकी कोशिश व्यर्थ गई। सिपाहियों ने उसे धक्का देकर हटा दिया। "तुम अपने मालिक को अंतिम बार देख लो और उसकी बीवी और बच्चे को बता दो कि वे इसका अंतिम संस्कार कर दें।" उन्होंने कहा। क्रोध, शोक और निराशा से बोझिल हंसधर इस दुखद समाचार को लेकर पाली की ओर सरपट चल पड़ा।

वह तेजी से रानी के पास जाकर फूट पड़ा, "मालिक अब नहीं रहे। उनके लिए शोक मनाओ।" रानी एक चीख के साथ अचेत हो गई। लेकिन छोटा पाली बिरवा निर्भीक बना रहा और पूरी कहानी जानना चाहा।

तब वह अपनी माँ से बोला, "माँ, तुम एक रानी हो और रानी को इतना कमजोर-दिल नहीं होना चाहिए। हंसधर ने मेरे पिता के मृत शरीर को नहीं देखा है। वे मरे नहीं होंगे। वास्तव में मुझे लगता है कि वे जीवित हैं। मैं जाऊँगा और उन्हें वापस लाऊँगा।"

"तुम बहुत छोटे हो मेरे बच्चे ! जिस काम में तुम्हारे पिता सफल नहीं हुए, उसमें तुम्हें सफलता कैसे मिल सकती है।" रानी बिलखती हुई बोली। लेकिन पाली ने चुपचाप अपने इस्तेमाल के लिए कुछ चीजें एकत्र कीं, अपने छोटे सुनहले ढाल और तलवार को बाँधा और हंसधर की पीठ पर सवार हो गया। "आओ, मेरे प्रिय विश्वासी मित्र, मुझे वहाँ ले चलो जहाँ तुमने मेरे पिता को आखिरी बार देखा था।" बालक ने आदेश दिया।

हंसधर उत्साह और आशा से रोमांचित हो गया। हो सकता है उसका छोटा मालिक ठीक कहता है। वे पुनः राजा को वापस ला सकते हैं।

कीर्ति स्तम्भ

मध्यप्रदेश अपनी वास्तु कलात्मक भव्यता के लिए सुविख्यात है। उनमें प्रमुख हैं खजुराहो के मंदिर-समूह। पचासी मंदिर अद्वितीय हैं, आकृति में शानदार हैं तथा पूर्णतया उत्कीर्णित हैं।

एक दूसरा प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भ है सांची का स्तूप जो मूल रूप से सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था। ऊँची छतों और भीति चित्रों के साथ ओरछा के महल वास्तु कला के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त मध्यप्रदेश में अनेक अल्प ख्यात स्मारक भी हैं।

बेशक, जितना उससे हो सकता है, वह अवश्य करेगा। समय कम है। इसलिए उसने अपने चौड़े जादुई पंखों को हिलाकर खोल लिया और बालक तथा अपनी पीठ पर उसके सामान के साथ आकाश में उड़ गया।

यात्रा के आधे मार्ग में वे पानी पीने के लिए एक नदी के पास रुके। वहाँ पर एक फुत्कार और चीं चीं की कुछ भयभीत आवाज की ओर हंसधर का ध्यान गया। निकट के एक वृक्ष पर एक बड़े घोंसले में उसने एक नाग को गिद्ध के दो बच्चों की ओर सरकते देखा जो भय से काँपते हुए चीं चीं कर रहे थे। ''जाओ राजकुमार और पक्षी के बच्चों की रक्षा करो। यह राजा का कर्त्तव्य है कि वह अपने राज्य के पशु-पक्षियों की रक्षा करे।'' हंसधर ने सलाह दी।

पाली पेड़ पर चढ़ गया और तलवार से नाग को टुकड़े टुकड़े काट दिया। तभी वहाँ एक विशाल गिद्ध आया। यह गिद्धों की रानी गिधल थी। ''धन्यवाद, मेरे राजा ! आपने उस दुष्ट नाग से मेरे अंतिम दो बच्चों को बचा लिया।'' उसने कहा। ''उसने पहले ही मेरे दस बच्चों को खा लिया। तुम अपने उद्देश्य में सफल रहो। मेरा आशीर्वाद, मेरी शक्ति और जंगल के साथी-प्राणियों की शक्तियाँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी।''

वे पुनः यात्रा पर चल पड़े। बरार में हंसधर पाली को वहाँ ले गया जहाँ सिंही सूरवा ने पहले विश्राम किया था। "मैं आज यहाँ विश्राम करूँगा और कल भोगीबिला को ललकारूँगा।" पाली ने कहा। उसने शुद्ध सोने का शिविर लगाया और सोने तथा मोतियों का पलंग बिछाया। उसने रेशमी तोशक और चादरें बिछाईं और सो गया। सोने का शिविर अंधेरे में चमकता था। भोगीबिला और उसके दरबारी जो किले में थे उसे देखकर चकाचौंध रह गये।

दूसरे दिन सबेरे इसके पूर्व कि भोगीबिला अपने आदमियों को भेजकर पता लगाये कि पिछली रात उन्हें किस चीज ने चकाचौंध किया था, पाली युद्ध

के लिए पहले से तैयार था। उसने बाग के कुएँ के सुनहले ढक्कन को निकाल लिया और किले में महल की ओर फेंका। वह चक्कर लगाता हुआ भोगीबिला के दरबार से जा टकराया जिससे अनेक दरबारी कुचल गये।

भोगीबिला ने सेना को आक्रमण करने का आदेश दिया, लेकिन व्यर्थ!

पाली और हंसधर विशाल सेना को रौंदते हुए आगे निकल गये। शीघ्र ही उन्होंने महल में जाकर भोगीबिला को घेर लिया। पाली ने उसे द्वंद्व युद्ध में मार गिराया। मृत राजा के सिपाही ने अपने प्राणों के डर से पाली को उस अंधेरे कमरे में ले गये जहाँ सिंही सूरवा कैद था। पिता और पुत्र ने हर्ष के साथ एक दूसरे का अभिवादन किया। शीघ्र ही पाली सिंही तथा भोगीबिला की बेटी बेबी गैला के साथ अपने विश्वासपात्र हंसधर पर सवार हो विजय गर्व के साथ पाली नगरी लौट गया।

पंन्ना-हीरा खान

भारत अनेक शताब्दियों तक हीरों का खजाना रहा है। जब तक दक्षिण अफ्रिका में हीरे की खान का पता न लगा तब तक भारत एक मात्र देश था जो पूरे संसार को हीरे की आपूर्ति करता था।

भारत में हीरे की एक मात्र खान मझगावन में है जो पन्ना जिला में है। भारतीय माइन्स ब्यूरो ने अनुमान लगाया है कि खान में एक मिलियन कैरेट हीरा बचा हुआ है।

वर्तमान समय में खान का काम राष्ट्रीय खनिज विकास निगम, जो भारत सरकार का उद्यम है, द्वारा किया जाता है। हीरे की खानें पूरे जिले के ८० कि.मी. के क्षेत्र में स्थित हैं।

अपने भारत को जानो

अन्य अधिकांश देशों की तुलना में भारत में पर्वों का आधिक्य है। हो सकता है ऐसा इसलिए है कि हमारा देश अधिकांश धर्मों का जन्म स्थल रहा है और हमलोगों ने अन्य धर्मावलम्बियों, जिनके धर्म कहीं और जन्मे-पनपे, का भी भारत को अपना आवास बनाने के लिए स्वागत किया है। सितम्बर, अक्तूबर तथा नवम्बर में पर्वों की मानों एक शोभा-यात्रा सी होती है; इसलिए इस महीने की प्रश्नोत्तरी यह जानने का प्रयास करेगी कि तुम इन पर्वों में से कितनों से परिचित हो।

१. दक्षिण भारत में एक स्थान दशहरा पर्व के लिए प्रसिद्ध है। वह स्थान कौनसा है? और पर्व का अनोखापन क्या है?

२. रथों को खींचकर ले जाने से पूर्व एक महाराजा पथ को साफ करता है। पर्व का नाम क्या है? और यह कहाँ मनाया जाता है?

३. यह पर्व एक राज्य में पतंगबाजी से जुड़ा हुआ है और एक अन्य राज्य में चावल पकाने से संबंध रखता है। पर्व तथा उन दोनों राज्यों के नाम बताओ।

४. मुस्लिम पैगम्बर मुहम्मद के बेटे हुसैन का शहादत मनाते हैं। उस दिन को क्या कहा जाता है?

५. उस पर्व का नाम क्या है जब पारसी फरवादिन महीने (अगस्त-सितम्बर) में जोरोस्टर का जन्म दिन मनाते हैं?

६. मदुराई में चित्रई पर्व का क्या महत्व है?

७. चेन्नई के एक महत्वपूर्ण पर्व में, जो जनवरी/फरवरी में मनाया जाता है, एक आराध्य देव को रंग-बिरंगे सजे-धजे बेड़ों में बाहर निकाला जाता है। कौन-सा मंदिर यह पर्व मनाता है? आराध्य देव कौन हैं?

८. गोवा में लोग होली पर्व को किसी अन्य नाम से जानते हैं। किस नाम से?

(उत्तर अगले महीने)

सितम्बर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. मेघनाद साहा।
२. विशप कॉटन।
३. बृहस्पति।
४. आर्यभट्ट।
५. थॉमसन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग।
६. रुरकी विश्वविद्यालय।
७. इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट।
८. पंजाब विश्वविद्यालय।
९. के.एम. पनिकर।
१०. बनस्थली विद्यापीठ।
११. कलकत्ता।
१२. नॉर्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी।

विघ्नेश्वर

गंगा तथा पार्वती के बीच ईर्ष्या बढ़ती गई। इस बीच गंगा का मेला पड़ा। नारद मुनि ने पार्वतीजी से कहा, ''तीन करोड़ देवता इस मेले के अवसर पर गंगा में स्नान कर रहे हैं जिसकी वजह से उनकी महिमाएँ गंगाजी को प्राप्त होनेवाली हैं। इसलिए माता गौरीजी, आप भी ऐसे ही करेंगी तो सारा जगत यह कहकर आपकी प्रशंसा करेगा कि आप अत्यंत विशाल हृदया और दयालु हैं!''

इसके बाद गंगाजी के पास जाकर बोले, ''गंगा भवानीजी, आपको पवित्र बनाने के लिए पार्वतीजी पधार रही हैं।''

''ऐसी बात है! अपनी दयालुता का परिचय देने आ रही है? आने दीजिए, मैं उसे बताती हूँ।'' गंगा बोलीं। इसके बाद पार्वती फूल छिड़ककर गंगाजी में उतरने को हुई, तब गंगाजी कड़ककर बोलीं, ''रुक जाओ! मुझे गंदा न बनाओ।'' यों पार्वती को गंगा ने रोका। इस पर दोनों के बीच बड़ा विवादपूर्ण संवाद चला।

''सुनो, कुमारस्वामी को शरवण सरोवर ने जन्म दिया है! तुम्हारे लूले हाथों में दबकर गुड़िया वाला शिशु बेचारा गजमुख बन गया है। तुम तो निपूती हो!'' गंगा ने परिहास किया।

''जानती हो, मैं कौन हूँ? परमशिव की अर्द्धांगिनी हूँ!'' पार्वती बोलीं।

''क्यों नहीं जानती? विवाह करनेवाले भोले पति को आधा खा जानेवाली परम पातकी हो न!'' गंगा ने मजाक उड़ाया।

१०. गोदावरी का जन्म

"हाँ, तुम तो फिसलकर गिर गई भ्रष्टा हो !" पार्वती ने व्यंग्य किया।

"हाँ, हाँ, यह बात सारा जगत जानता है कि जब शिवजी के कंठ में हलाहल अपने ताप का प्रकोप दिखा रहा था, तब मैंने उसे शीतल बनाया। इस पर उन्होंने अपने सर पर मुझे धारण किया, इसलिए सबको विदित है कि मैं उनके अनुराग का पात्र हूँ या भ्रष्टा हूँ !"

गंगा ने समझाया। "किसी के पुकारने पर तुम चल पड़ी और उनके सर पर फँस गई अनाथा हो !" पार्वती ने परिहास किया।

"तुम प्राणियों की बलि चाहनेवाली निर्दयी माता हो ! वामाचारिणी हो ! अछूत मातंगिनी हो और कर्कश हृदया शक्ति हो !" गंगा ने मजाक किया।

•

"गंगे, तुमने खूब याद दिलाया। हाँ, मैं शक्ति हूँ। महाशक्ति हूँ।" यों कहते पार्वती आवेश में आ गईं। इस पर प्रलय कालीन प्रभंजन बहने लगा। सभी दिशाओं में अंधकार फैल गया। बिजलियाँ गिरने लगीं। मेघ गरजने लगे। पृथ्वी काँप उठी। बर्फ की चोटियाँ गलने लगीं। सारी प्रकृति में हलचल मच गई।

पार्वती के आवेश को देख गंगा बोलीं, "तुम मुझे शीतल व शांत समझकर नीचा दिखा रही हो। पर यह बात भूल गई हो कि मैं जल शक्ति हूँ। मुझे भड़काने का पाप तुम्हारे ही सिर पर लगेगा।" ये शब्द कहते गंगानदी ने भीषण बाढ़ के साथ सारे उत्तर भारत को जलमय बना दिया।

उस समय विघ्नेश्वर दक्षिण से लौटते हुए नारद को देख बोले, "कलह भोज ! आपने कैसा बड़ा उपद्रव खड़ा किया है?" इस पर नारद बोले, "ऐसे उपद्रव के वक़्त ही तो पता चलता है कि जगत के कल्याण के हेतु श्रम उठानेवाला कौन हैं? यों परिहास करते नारद चले गये, तब विघ्नेश्वर कैलास पहुँचे।

कैलास में पार्वतीजी पछताते हुए मन ही मन सोचने लगीं, "फ़िर से एक भगीरथ जन्म लेकर गंगा को जब तक न ले जाये, तब तक गंगा का यह उत्पात कम न होगा।"

ये बातें विघ्नेश्वर ने सुन लीं; पर भोले बनकर वे पार्वती के चरणों में प्रणाम करके बोले, "माताजी, मैं एक पुण्य का कार्य करना चाहता हूँ, मुझे आशीर्वाद दीजिए।"

"विघ्नेश्वर के संकल्प करने पर उस काम को रोकने वाला कौन है, बेटा? लगता है कि तुम दक्षिण हो आये हो, बात क्या है?'' पार्वती ने पूछा।

"माताजी, विंध्याचल के दक्षिण में सारी जमीन सूखी पड़ी है! वह सारा प्रदेश शस्य श्यामल बन जाये और आप अन्नपूर्णा का नाम सार्थक बना लें, गंगामाता उधर अपनी कृपा दृष्टि डाल दें तो क्या ही अच्छा होगा!'' विघ्नेश्वर ने कहा।

"मैं क्या कहूँ! यह सब विश्वनाथ की कृपा है!'' पार्वती बोलीं।

"यों सोचकर हम चुप देखते नहीं रह सकते हैं न! इसमें हमारा भी तो प्रयत्न होना चाहिए!'' विघ्नेश्वर ने कहा।

"ज़रूर होना चाहिए, तिस पर तुम जैसा व्यक्ति इसमें सहयोग दे तो वह कार्य ज़रूर सफल हो सकता है!''

"बस, माताजी! मैं आपके मुँह से यही बात सुनना चाहता था! अब मुझे आज्ञा दीजिए!'' यों कहकर पार्वती के चरणों का स्पर्श करके विघ्नेश्वर सीधे महर्षि गौतम के आश्रम की ओर चल पड़े।

गौतम मुनि पश्चिमी पहाड़ियों के बीच आश्रम बनाकर खेती कर रहे थे। विघ्नेश्वर गाभिन गाय के रूप में बदल गये!

फसल को कुचलने वाली गाय को भगाने के ख्याल से गौतम ने अपने कमंडलु के जल को हथेली में लेकर फेंक दिया। पानी की बूँदों के

गिरते ही गाय नीचे गिरकर बेहोश हो गई। इस पर गौतम ने अपनी तपस्या और पुण्य को भी समर्पित किया, फिर भी मायावी गाय ने अपनी आँखें नहीं खोलीं। इस पर नारद ने इन्द्र को उकसाया। इन्द्र पहले से ही गौतम से नाराज थे।

ब्रह्मदेव ने एक अपूर्व सुंदरी के रूप में अहल्या की सृष्टि की। इन्द्र उसके प्रति आकृष्ट हुए। कई लोग अहल्या को पाने के लिए होड़ करने लगे। इस पर ब्रह्मदेव ने शर्त रखी कि जो व्यक्ति सबसे पहले भूदेवी की प्रदक्षिणा करके लौटेगा, अहल्या उसीकी हो जाएगी।

गौतम मुनि प्रसव करनेवाली गाय की प्रदक्षिणा करके लौटे, ब्रह्मा से तर्क करके उन्हें मनाया और अहल्या को जीत लिया। गौतम ने कहा था कि गाय साक्षात् भूदेवी के समान है।

पर अब उन्हीं के हाथों से गोहत्या हो गई है, इन्द्र को अब गौतम के साथ बदला लेने का अच्छा मौक़ा मिला।

इस पर उन्होंने एक ऋषि का वेष धारण कर सारे लोकों में भ्रमण करते हुए प्रचार करना प्रारंभ किया, "गौतम मुनि गोहत्या करनेवाले महान् पापी हैं। उस पाप के कारण उनका आश्रम अपवित्र हो गया है। इस पाप का परिहार करने के लिए गंगा जल उस आश्रम में गाय पर प्रवाहित होना चाहिए, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं है।"

कहाँ गंगा? और कहाँ पश्चिमी पहाड़ियाँ ! फिर भी गौतम मुनि ने भगीरथ को आदर्श बनाकर हिमालय में बैठी गंगा को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की।

कपिल महामुनि की क्रोधाग्नि में भस्म हुए अपने दादा-परदादाओं का उद्धार करने के लिए एक जमाने में भगीरथ ने देव गंगा के प्रति तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया था। उन्हें आसमान से पृथ्वी पर लाये। शिवजी ने अपने जटा-जूटों में गंगा को धारण कर लिया। इस पर गंगा गंगा-भवानी कहलाई। भगीरथ ने गंगाजी को छोड़ने के लिए शिवजी से प्रार्थना की।

शिवजी ने जटाओं की गांठ को थोड़ा ढीला करके गंगा की छोटी सी धारा को छोड़ दिया। इस पर बड़ी तेज गति के साथ गंगा छितर कर हिमालय में चारों तरफ़ गिर गई। इसके बाद गंगा प्रवाह का रूप धारण कर भगीरथ के साथ पूर्वी दिशा में चल पड़ी। इसी वजह से गंगा का नाम भागीरथी पड गया।

हिमालय में गिरी गंगा की एक धारा हिन्दूकुश पर्वतों से होकर पश्चिमी दिशा में बहकर इन्दु नदी कहलाई। बाद को लोगों ने इंदु नदी को सिंधु नदी पुकारा। भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर प्रवाहित होनेवाली सिंधु नदी के कारण ही भारतवर्ष हिन्दू देश कहलाया।

गंगा जब भगीरथ के पीछे तेज गति के साथ बहती जा रही थी, तब जह्नु महामुनि ने उस धारा के कारण अपने आश्रम को नष्ट होने से बचाने के लिए गंगा को पी लिया। इस पर भगीरथ ने जह्नु मुनि से प्रार्थना करके गंगा को मुक्त कराया।

तब जह्नु मुनि के कान से गंगा बाहर निकली,

इस कारण गंगा का नाम जाह्नवी पड़ गया। इसके बाद कपिलाश्रम में पहुँचकर भगीरथ ने गंगा को अपने पूर्वजों के ऊपर से बहने दिया। इस तरह उन्हें शाप से मुक्त कराया। तब जाकर भगीरथ का प्रयत्न सफल हुआ।

गंगाजी गौतम की तपस्या पर प्रसन्न हुईं और उनके पीछे-पीछे चल पड़ीं। उनके आश्रम में पहुँचते ही गंगा ने एक प्रवाह का रूप धारण कर लिया। गौतम रास्ता दिखाते आगे बढ़ रहे थे। गंगा गाय पर से प्रवाहित होकर गौतमी कहलाई। इस पर मायावी गाय झट से उठ खड़ी हो गई, चार क़दम चलकर ऊपर उड़ी और आसमान में अदृश्य हो गई। तब विघ्नेश्वर का साक्षात्कार हुआ।

विघ्नेश्वर ने गंगाजी को प्रणाम करके कहा, "माताजी, अपने इस पुत्र को क्षमा कीजिए! मैंने इसलिए यह काम किया है कि आपकी दया रूपी अमृत जल धारा से विंध्याचल के नीचे की सारी भूमि शस्य श्यामल बन जाये! आपने दक्षिण गंगा के रूप में अवतरित होकर गाय को बचा लिया, इस कारण आप गोदावरी नाम से प्रसिद्ध होंगी!" यों गंगाजी की स्तुति करके विघ्नेश्वर अदृश्य हो गये।

गोदावरी ने अनेक उप नदियों के साथ पूर्वी दिशा में बहकर पूर्वी मैदानों को शस्य श्यामल बना दिया। सप्त ऋषि तथा देवताओं ने गोदावरी में स्नान किये। इसके बाद गौतम की प्रशंसा करके उन्हें अपर भगीरथ बताया। इसके बाद
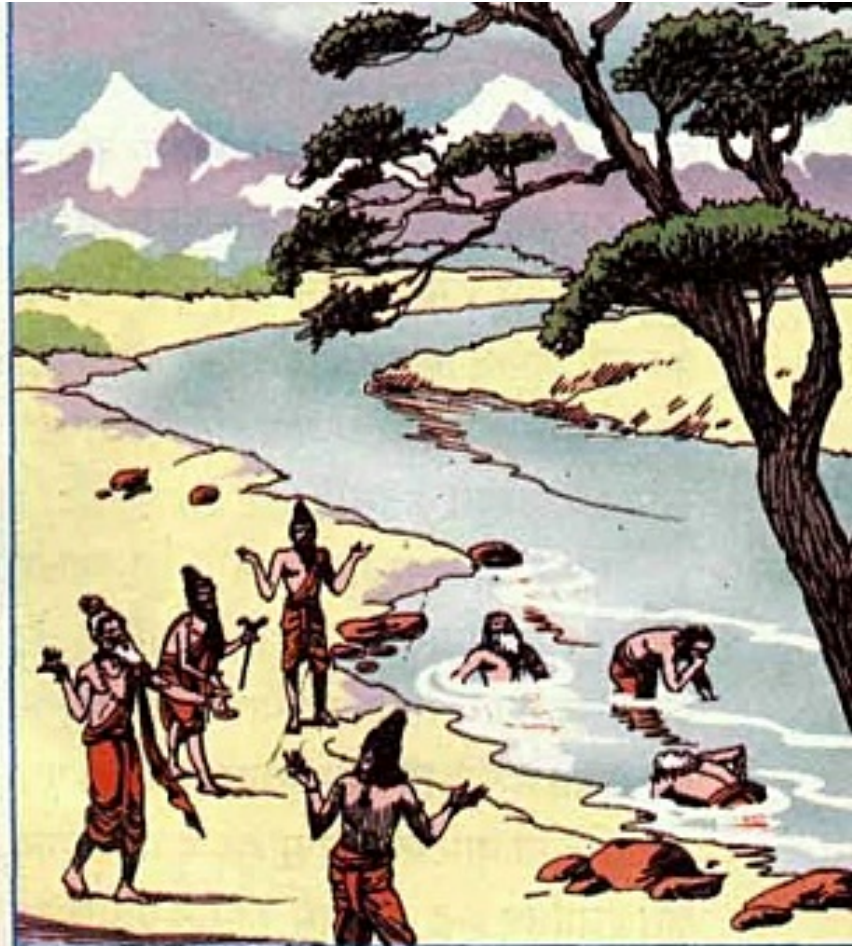
गोदावरी सात शाखाओं में बंटकर सप्त गोदावरी नाम से पूर्वी समुद्र में जा मिली।

गंगा जब गोदावरी धारा के रूप में बदल रही थी, तब उसकी श्यामल वेणी फैलकर पश्चिमी घाटियों में फँस गई। इस पर विष्णु ने अपने हाथ की उंगलियों द्वारा वेणी की उलझन को खोल दिया। कृष्णवर्णधारी विष्णु की उंगलियों के बीच से वेणी की धारा फिसलकर वह कृष्णवेणी कृष्णा नदी के नाम से एक और बड़ी नदी के रूप में प्रवाहित हुई।

इसी तरह गंगाजल ने आसमान में उछलकर दक्षिण में स्थित कवेर महामुनि के आश्रम में उनके कमण्डलू में गिरकर एक कन्या का रूप धारण कर लिया, तब अगस्त्य के पीछे जंगलों में विहार करते कावेरी नदी का

रूप धरकर सुंदर जल-प्रपातों के द्वारा दक्षिण देश में प्रवाहित हुई। इस प्रकार गौतम महर्षि द्वारा लाई गई गंगा ने तीन और बड़ी नदियों का रूप धारण किया और दक्षिण भारत को समृद्ध बनाया। इसी कारण गंगा गोदावरी, कृष्णा व कावेरी कहलाई।

गंगा के आने से गौतम ऋषि का आश्रम फिर से शोभायमान हो उठा। गोदावरी के तट पर अनेक पुण्य तीर्थ स्थापित हुए। साथ ही गौतम का यश चारों तरफ़ व्याप्त हो गया। गंगा का पश्चिमी घाटियों में प्रवाहित होना असंभव था, इसीलिए इन्द्र ने गौतम को यह प्रायश्चित बताया था।

यद्यपि इन्द्र ने गौतम से क्षमा माँग ली, फिर भी उन्हें संतोष न हुआ, क्योंकि इसके पूर्व इंद्र के धोखे की वजह से नाराज हो गौतम ने अहल्या को एक शिला का रूप धरकर पड़ी रहने का शाप दिया था। तब वे विंध्याचल को पारकर पश्चिमी घाटियों में अपना आश्रम बनाकर तपस्या करने लगे थे। पर गोदावरी के उद्भव से पश्चिमी घाटियों में अनेक मुनियों के आश्रम स्थापित हुए।

अत्रि महामुनि त्रिमूर्ति के अंश से पुत्रवान हुए। अनसूया अतिथियों को अन्नदान करने लगी। फसल प्रचुर मात्रा में होने लगी।

गौतम के आश्रम के चारों तरफ़ फसल समृद्ध थी, मगर अहल्या का अभाव उन्हें खटकने लगा। जल्दबाजी में आकर अहल्या को शाप देने के कारण गौतम पछताने लगे, ऐसी हालत में विघ्नेश्वर ने दर्शन देकर कहा, ''हे गौतम महर्षि! शीघ्र ही विष्णु रामचन्द्रजी का अवतार लेकर अपने चरण का स्पर्श कराकर शिला रूप में स्थित आपकी पत्नी को पुनः मानव रूप-धारिणी बनानेवाले हैं! इसलिए वह पाषाण पुनीत हो जायेगा! गोदावरी का जन्म देने के लिए मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया है। आज से गोदावरी के लिए गौतमी नाम शाश्वत हो जाएगा।''

गौतम मुनि प्रसन्न हो बोले, ''विघ्नेश्वर! यह सब आपके संकल्प बल का फल है। गोदावरी जल तथा विघ्नेश्वर की कृपा सदा-सर्वदा हमारी रक्षा करते रहेंगे!''
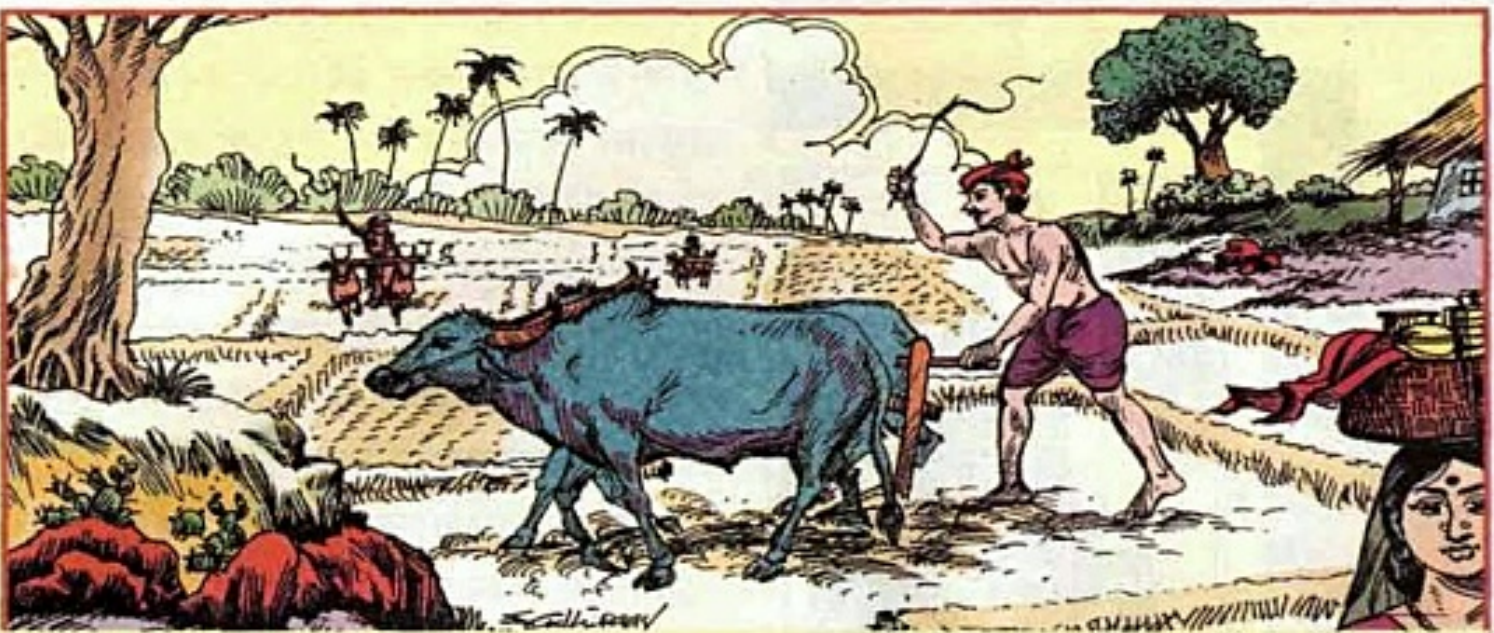
भवानी का अनुग्रह

भवानीपुर में बुक्का नामक एक चोर रहा करता था। पर वह हमेशा चोरी नहीं करता था। खेतों की सिंचाई के समय, फ़सल काटते समय, वह काम पर चला जाता था। मज़दूरी जब-जब मिलती, काम करता था। वह शादी शुदा था और उसका एक बेटा भी था। उसकी पत्नी जानती थी कि वह चोरी भी करता है, पर उसके बेटे को यह राज़ मालूम न था।

बुक्का चोरी पर जाने के पहले भवानी के मंदिर में अवश्य जाता था और प्रार्थना करता था, ''माँ, ज़रूरत पड़ने पर ही मैं चोरी करता हूँ। जिस प्रकार तुम सबसे भेंट स्वीकार करती हो, उसी प्रकार मुझसे भी यह भेंट स्वीकार करना। मेरी आमदनी का चौथा हिस्सा तुम्हें भेंट के रूप में देता आ रहा हूँ। एक मेरा, एक मेरी पत्नी का, एक मेरे बेटे का और चौथा हिस्सा तुम्हारा। मैं तुम्हें भी अपने परिवार का एक हिस्सा मानता हूँ। मुझे हर ख़तरे से बचाना। बस, इसका ख्याल रखना कि कहीं मैं पकड़ा न जाऊँ और सकुशल घर लौटूँ।''

उसकी ज़िन्दगी आराम से कट रही थी, इसलिए उसे किसी भी दिन इसका भय नहीं हुआ कि मैं पाप कर रहा हूँ।

बुक्का एक बार चोरी करने शहर चला गया। उस समय रंगमंच पर वाल्मीकि महर्षि नाटक प्रदर्शित हो रहा था। वाल्मीकि महर्षि का पहला नाम भी बुक्का था। उसका नाम भी बुक्का है, इसलिए उसमें कुतूहल जगा और उसने बड़े ध्यान से पूरा नाटक देखा। इस बात पर उसे अचरज होने लगा कि चोर बुक्का वाल्मीकि बना और उसने रामायण रची। वह सोचने लगा, अगर मैं भी चोरी करना छोड़ दूँ तो शायद मैं भी इतना बड़ा आदमी बन जाऊँ।

- सुप्रिया -

''माँ भवानी, यह मेरी आख़िरी चोरी होगी। फिर मैं पंडितों के पास विद्याभ्यास करूँगा और एक ग्रंथ लिखूँगा। इस बार मुझे ज्यादा से ज्यादा माल मिले, बस, इतना अनुग्रह मात्र करना।'' मन ही मन यों उसने प्रार्थना की। परंतु इस बार चोरी करते हुए वह पकड़ा गया। सैनिक उसे दंड देनेवाले अधिकारी के पास ले गये। अधिकारी ने उसे जेल में डाल दिया।

बहुत दिनों के बाद भी बुक्का जब वापस नहीं लौटा तब उसकी पत्नी को डर लगने लगा। उसे भय होने लगा कि कहीं मेरा पति पकड़ा तो नहीं गया। एक दिन सूर्यास्त के समय वह अपने बेटे नारायण को लेकर भवानी के मंदिर में गयी। उसने भवानी से कहा, ''माँ, मानती हूँ कि मेरा पति चोर है, परंतु वह तुम्हारा भक्त है। अमीर बनने या भवन बनाने के लिए उसने चोरियाँ नहीं कीं। ग़रीबी ही उसकी चोरी की वजह है। मेरे पति को सकुशल घर लौटाना।'' कहती हुई वह रोने लगी।

माँ की बातों को सुनकर नारायण को आश्चर्य होने लगा। यह जानकर उसे बहुत दुख हुआ कि उसका बाप एक चोर है। यह धक्का उससे सहा नहीं गया। अपनी माँ के साथ वह घर नहीं लौटा। वहीं मंदिर के मंडप में बैठा रहा।

नारायण उस समय भी मन ही मन यही सोच रहा था कि अपने भक्त मेरे पिता को भवानी क्षमा कर देंगी और उसकी रक्षा करेंगी। यह सोचते-सोचते वह सो गया। नींद में उसने एक सपना देखा। सपने में भवानी सुमंगली के रूप में प्रत्यक्ष हुईं और कहने लगीं, ''नारायण, क्या भवानी को गाली देने आये हो, क्योंकि वह अपने भक्त की रक्षा नहीं कर सकी।''

उसके इस सवाल पर नारायण काँप उठा और कहा, ''नहीं माते, नहीं। केवल अनुग्रह दिखाने के लिए प्रार्थना करने आया हूँ।''

इस बार उस सुमंगली ने गंभीर स्वर में कहा, ''मैं सुमंगली के वेष में आयी हूँ, फिर भी तुमने मुझे पहचान लिया। तुम्हारी भक्ति की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकती। तुम्हारे पिता वाल्मीकि बनने की तीव्र इच्छा रखते हैं, पर उसने अपने मन के विकारों का परित्याग नहीं किया। उसमें राग, द्वेष जैसे के तैसे बने हुए हैं। परिवार की जिम्मेदारी संभालने के लिए वह चोरियाँ करता था, इसलिए मैंने उसे माफ़ कर दिया। पर वाल्मीकि की तरह बड़ा मनुष्य बनने की आकांक्षा लिये उसने चोरी की और पकड़ा गया।''

''माँ, अब माँ की देखभाल करना मेरा कर्तव्य है। साल भर मज़दूरी करके पेट भरने के लिए काम नहीं मिलेंगे। कोई छोटा-सा व्यापार करके जी सकता हूँ, पर मेरे पास धन नहीं है।'' वह आगे कुछ बोल नहीं पाया।

सुमंगली अदृश्य हो गयी। आँख खोलते ही नारायण अपने आप कहने लगा, ''मैं कितना भाग्यवान हूँ। माँ भवानी को प्रत्यक्ष तो देख नहीं पाया, पर कम से कम सपने में उनके दर्शन मिले।'' यों कहकर वह उठने ही वाला था कि उसे एक छोटी थैली दिखायी पड़ी। जल्दी-जल्दी उसने वह थैली खोली। उसके अंदर चाँदी की अशर्फ़ियाँ थीं। उन्हें देखकर वह सोच में पड़ गया।

''मैंने इन अशर्फ़ियों को हुँडी से नहीं चुराये। माँ भवानी ने स्वयं दिये।'' वह थैली थामे वहाँ से निकल पड़ा और राजधानी पहुँचा। बहुत कोशिश के बाद उसे राजा के दर्शन का मौक़ा मिला। उसने राजा से अपने पिता के बारे में बताया और साथ ही उसने वह सब कुछ बताया, जो उसने सपने में देखा था।

राजा उसकी बातों पर चकित होकर बोला, ''अरे नारायण, तुम ईमानदार हो। इसीलिए माँ भवानी के दिये धन को लेकर सीधे यहाँ आ गये हो। अगर कोई और होता तो इस धन को लेकर रफ़ूचक्कर हो जाता। अगर तुम्हारा बाप वाल्मीकि जैसा बड़ा आदमी बनना चाहता हो तो इसमें उसकी कोई ग़लती नहीं। पर इसके लिए उसने जो मार्ग अपनाया, वह ग़लत है। इसीलिए माँ भवानी ने एक तरफ़ उसे सज़ा दी और दूसरी तरफ़ उसपर अपना अनुग्रह भी दिखाया।'' फिर राजा ने सैनिकों को बुलाया और बुक्का को जेल से रिहा कर देने की आज्ञा दी। बाप और बेटा सुखमय जीवन बिता सकें, इसके लिए आवश्यक प्रबंध भी किया।

इस अनुभव से राजा ने फ़ायदा उठाया। उस दिन से अपराधियों में परिवर्तन लाने की उसने भरसक कोशिश की। कोई दूसरा विकल्प न होने पर ही वह अपराधी को दंड देता था। पर साथ ही ऐसे अपराधियों के परिवारों के पालन-पोषण के लिए आवश्यक प्रबंध भी करता था।

मनोरंजन टाइम्स

रंगीन मजा

नीचे एक सुंदर दृश्य दिया गया है। क्यों नहीं तुम इसमें रंग भरकर अधिक जीवन्त बना दो। हमने तुम्हारी मदद के लिए रंग योजना भी दी है। मजा लो!
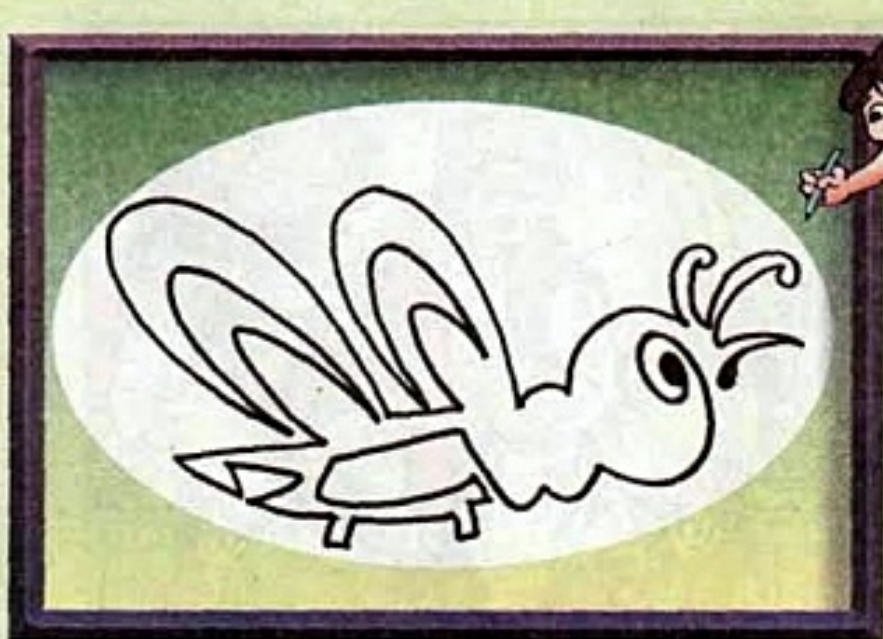
मात्र एक घसीट

क्या यह आश्चर्यजनक मधुमक्खी नहीं है? लेकिन है यह निराला! इसे एक घसीट में चित्रित किया गया है। क्यों नहीं तुम इसे बनाने की कोशिश करते?

उन्हें खोज निकालो !

ये दोनों चित्र एक समान लग सकते हैं, लेकिन इन दोनों में आठ भिन्नताएँ हैं।
शुभ खोज !

अप्रत्यक्ष खतरा !

लगता है मनीश बंदर पेड़ के नीचे आराम करते हुए आनन्दपूर्वक समय काट रहा है। लेकिन अनेक जानवरों के रूप में चारों ओर प्रच्छन्न खतरा है। क्या तुम उन्हें पहचान सकते हो?

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

कृतज्ञ - कृतघ्न

रत्नगिरि के ज़मींदार का माली सांप के डंसने से अचानक मर गया। ज़मींदार उसकी पत्नी को ढ़ाढ़स बंधाने उसके घर गया। उसने उसकी पत्नी से कहा, ''मैं जानता हूँ कि अब तुम्हारे लिए कमाई का कोई रास्ता नहीं रह गया। मेरा फर्ज़ बनता है कि तुम्हारी जीविका का कोई रास्ता ढूँढ़ निकालूँ। तुम्हारे बड़े बेटे को अपने दिवान में नौकरी दिलवाऊँगा, जिससे तुम लोग खा-पी सको और निश्चिंत रह सको।''

इस पर माली की पत्नी ने कहा, ''मालिक, मेरा बड़ा लड़का समझदार है। वह मेहनती है। कोई भी तक़लीफ सह सकने की उसमें शक्ति है। कठिन से कठिन परिस्थिति का भी वह सामना कर सकता है। कहीं भी वह नौकरी ढूँढ़ सकने के लायक़ है। इसलिए कृपया वह नौकरी मेरे दूसरे बेटे को दीजिए, क्योंकि मेरे बड़े बेटे की तरह वह न ही योग्य है, न ही उसमें समझ है।''

इस पर ज़मींदार ने बड़े बेटे की राय और सहमति पूछी। उसने माँ का यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार किया। छोटा बेटा दिवान में अब काम पर लग गया। उसकी ज़िन्दगी आराम से कटने लगी।

बड़ा बेटा अब खेती का काम संभालने लगा। दो एकड़ का खेत उसके पिता उसके लिए छोड़ गया था। पर वह खेत उपजाऊ नहीं था। दिन-रात उसने मेहनत की और खेत को उपजाऊ बनाया। उसे मेहनत का फल मिला। इसके लिए उसने कर्ज लिया और उस खेत में आम के पौधे रोपे। बड़ी ही सावधानी से वह खेत की देखभाल करने लगा।

चार सालों के बाद आम का बग़ीचा लहलहाने लगा। पेड़ फलों से लबालब भर गये। उनसे अब

- शिवकुमार -

आमदनी आने लगी। दो तीन सालों में उसने गाँव में थोड़ी-बहुत जायदाद भी ख़रीद ली।

रत्नगिरि में नौकरी पर लगे छोटे बेटे को यह बात मालूम हुई। बड़े भाई का यों बढ़ना उसे अच्छा नहीं लगा, वह पचा नहीं पाया। वह यह भूल भी गया कि बड़े भाई के त्याग के कारण ही उसे यह नौकरी मिली थी। कृतज्ञता का भाव उसमें रत्ती भर भी नहीं रहा।

अचानक एक दिन वह गाँव आया। उसने माँ से कहा, ''यह क्या हो रहा है माँ! मेरे साथ अन्याय करने पर आम लोग क्यों तुले हो? पिता की जायदाद में हम दोनों का बराबर का हिस्सा है। पर इसका फ़ायदा बड़े भाई ही उठा रहे हैं। आप ही बताइये, यह क्या उचित है? आपने ऐसा क्यों होने दिया?''

वह बड़े बेटे के समर्थन में बोलना चाहती थी, पर यह सोचकर चुप रह गयी कि ऐसा करने पर उसका बेटा और नाराज़ हो जायेगा।

माँ को मौन देखकर दूसरा बेटा गाँव में रहनेवाले शरभ के पास गया। वह उनके दूर का रिश्तेदार था। उससे उसने अपने प्रति किये जा रहे अन्याय को दुहराया और उससे सहायता माँगी। शरभ कलहप्रिय था। ऐसे झगड़ों में पड़ना उसे बहुत अच्छा लगता था। उसकी हमेशा यही कोशिश होती थी कि जितना हो सके, झगड़ा बढ़ाऊँ और तमाशा देखता रहूँ। साथ ही वह इस कोशिश में लगा रहता था कि इस झगड़े से अपना उल्लू सीधा करूँ।

शरभ ने छोटे को समझाते हुए कहा, ''अरे छोटे, इतनी आसानी से यह सुलझनेवाली बात नहीं है। हमें ग्रामाधिकारी से इसकी शिकायत करनी होगी।''

ग्रामाधिकारी, शरभ का अच्छा दोस्त था। तिसपर वह रिश्वतखोर था। इसलिए दूसरे बेटे के पक्ष में ही फ़ैसला सुनाया गया। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि इसमें शरभ का बड़ा हाथ था।

अब छोटा सोच में पड़ गया कि उस एक एकड़

की जो ज़मीन उसे मिल गयी, उसे क्या करूँ और खेती के लिए किसको सुपुर्द करूँ। इस मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए शरभ ने उससे कहा, ''क्यों बेकार परेशान होते हो? मैं जो हूँ! बग़ीचा मैं संभाल लूँगा। साल भर में जो आमदनी होगी, आधा-आधा बाँट लेंगे।''

छोटे ने सहर्ष बग़ीचे की देखभाल की जिम्मेदारी शरभ को सौंप दी। फिर दूसरे ही दिन वह रत्नगिरि लौट गया।

माँ यह सब कुछ ध्यान से देख रही थी। शरभ और ग्रामाधिकारी की साजिश वह समझ गयी। बड़े बेटे के साथ जो अन्याय हुआ, उससे सहा नहीं गया। अपने बड़े बेटे को लेकर वह रत्नगिरि पहुँची और अपने छोटे बेटे और शरभ की शिकायत ज़मींदार से की।

जमींदार ने दोनों को अपने दिवान में बुलवाया और ड़रा-धमकाकर विषय की पूरी जानकारी प्राप्त की। पूरा विषय जानने के बाद ज़मींदार छोटे पर आग-बबूला होते हुए बोला, ''अरे कृतघ्न, जिसने तुम्हारी भलाई की, तुम्हारे लिए त्याग किया, ऐसे निस्वार्थी के साथ ऐसा बर्ताव करने पर आमादा हो गये? कितनी शर्म की बात है! बड़े लोग कहते हैं कि कृतघ्न हत्यारे से भी बड़ा पापी होता है। तुम जैसे अयोग्य के लिए मेरे दिवान में कोई स्थान नहीं। मैं तुम्हें नौकरी से निकाल रहा हूँ। आम के बगीचे में ही रहो और ज़िन्दगी के बाकी दिन काटो।''

फिर ज़मींदार ने शरभ व ग्रामाधिकारी को उनके दुराचरण के लिए खूब डाँटा-फटकारा। उन्हें जुरमाना भरने का आदेश दिया। फिर ज़मींदार ने बड़े बेटे से कहा, ''तुमने मेहनत की और बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया। अब वह एक एकड़ की भूमि तुम्हारी अपनी है। तुम निस्वार्थी हो। तुम्हारी उपकार बुद्धि की मैं प्रशंसा करता हूँ। तुम्हें ग्रामाधिकारी के पद पर नियुक्त कर रहा हूँ।'' फिर ज़मींदार ने इसके लिए आवश्यक काग़ज़ात भी तैयार करवाये।

यों निष्कपट व निस्वार्थ दिलवाले भाई के अच्छे दिन आये।

दो नौकर

कोदण्ड ज़मींदार का नौकर था। खेतों पर काम करनेवाले मजदूरों के काम पर निगरानी रखना उसकी जिम्मेदारी थी। उनपर वे बात-बात पर हुक्म भी चलाता रहता था। ज़मींदार के आदेश के अनुसार हर दिन जो-जो काम वे करते थे, उनके विवरण भी पुस्तक में दर्ज करता था। सप्ताह में एक बार वह पुस्तक ज़मींदार को दिखायी जाती थी।

यों समय गुज़रता गया। कुछ दिनों के बाद रतन नामक एक नया नौकर जमींदार के यहाँ नियुक्त हुआ। वह भी कोदण्ड के साथ रहता और मजदूरों को काम-काज सौंपता था। वह भी उन कामों के विवरण पुस्तक में लिख लेता था और सप्ताह में एक बार ज़मींदार को दिखाता था। एक दिन दोपहर को कोदण्ड ने देखा कि रतन मजदूरों के साथ एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ ठर्रा पी रहा है। उसने वह बात भी पुस्तक में लिख दी और रतन को दिखा दिया।

रतन रोते-बिलखते हुए कहने लगा, "कोदण्ड, तुमने यह क्या कर दिया? पुस्तक में तुमने जो लिखा, वह ज़मींदार देखेंगे तो मुझे नौकरी से निकाल देंगे। मुझपर दया करो। जो लिखा है, उसे मिटा दो। नहीं तो मेरा सर्वनाश हो जायेगा, मैं कहीं का नहीं रहूँगा।"

कोदण्ड ने उससे कहा, "देखो, मैं ईमानदार आदमी हूँ। किसी भी हालत में सच छिपा नहीं सकता। ज़मींदार को यह पुस्तक दिखाकर ही रहूँगा। उन्हें जानना ही चाहिए कि तुम शराबी हो।"

रतन ने इस बार अपनी पुस्तक खोली और कोदण्ड को दिखाया। उसमें लिखा था, "इतने दिनों के बाद, आज ही वह एक दिन है, जिस दिन कोदण्ड ने शराब नहीं पी।"

- भवानी प्रसाद

चन्दामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
20
चित्र : पाणि
रवीन्द्रदेव आदित्य की तलाश छोड़ देता है और अपने पिता कमाण्डर नरेन्द्रदेव के पास जाने के लिए पर्वतीय गुफाओं की ओर चल पड़ता है। तांत्रिक नागबन्धु विचित्र आकृतिवाले पाशंकर का आवाहन करता है और उसे आदित्य को लाने के लिए कहता है जो उसके शत्रु गरुड की सुरक्षा में है। राजा महेन्द्रवर्मा चन्द्रपुरी लौट आता है और नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव को राजद्रोही घोषित करता है। आदित्य सर्पदिश जाने के लिए तैयार होता है जहाँ से उन्हें जीवित या मृत ला सके।

अरुणा आदित्य से उसके निवास स्थान पर मिलती है।
मैंने सुना है, कल आप जा रहे हैं। क्या मैं जान सकती हूँ कहाँ?
सर्पदिश। तांत्रिक नागबन्धु इतनी खतरनाक शक्ति है कि उसका अस्तित्व नहीं रहना चाहिए। उसे तुरंत समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

पूरी मानवता को यह नष्ट कर दे उसके पहले मुझे शैतान से मातृभूमि की रक्षा करनी होगी।
मुझे विश्वास है कि आप सफल होंगे। भगवान गरुड की रक्षक शक्ति आपकी रक्षा करें।

अरुणा के जाने के बाद आदित्य अंदर जाता है और गरुड़ की प्रतिमा के समक्ष ध्यान करता है।
शत्रु का सामना करने का समय आ गया है। हे प्रभु ! अपनी मातृभूमि की रक्षामें मेरा मार्गदर्शन करें।

एक फुत्कार की ध्वनि सुनाई पड़ती है। आदित्य जागता है और स्त्री के धड़ के साथ एक विशाल सर्प देखता है।
मैं पाशंकर हूँ। तुम्हारा अंतिम समय आ गया है, आदित्य ! अब कोई तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता।

आदित्य ने जैसे ही अपनी आँखें बंद कीं, अनुष्ठान करते हुए तांत्रिक का दृश्य उसके मानस पटल पर उभर आया।

गरुड़ की प्रतिमा के सामने रखा हुआ पंख एक बहुत बड़े पक्षी का आकार लेता है और सर्प का पीछा करता है। पाशंकर भागने का प्रयास करता है।

सर्प को पक्षी का पंजा मजबूती से पकड़े हुए है। पाशंकर बच निकलने में असमर्थ है। दोनों में संघर्ष होता है। सर्प पक्षी की पकड़ में संघर्ष करते हुए आग उगलने लगता है।

सर्प परास्त हो जाता है। शक्तिशाली पक्षी घायल सर्प को लेकर आकाश में उड़ जाता है और तांत्रिक की गुफा के द्वार पर उसे गिरा देता है।

किसी भारी चीज के गिरने की आवाज और पंखों की फड़फड़ाहट सुनकर तांत्रिक बाहर आता है और देखता है कि सर्प पीड़ा से कराह रहा है और एक पक्षी उड़ा जा रहा है।
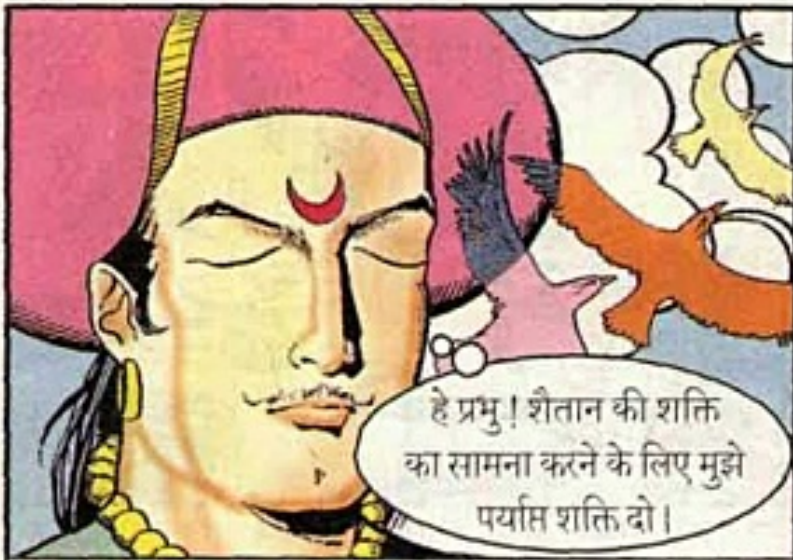
हे प्रभु! शैतान की शक्ति का सामना करने के लिए मुझे पर्याप्त शक्ति दो।
आदित्य ध्यान में रहते हुए इन विचित्र घटनाओं के प्रति सजग है।

स्त्री की विकृत धड़ अब ज्वालामुखी के लावा के समान पिघलती है और उसमें से पाशंकर प्रकट होता है।
हे प्रभु! वह लाखों सूर्यों के समान शक्तिशाली है। मेरे दाँतों में...

...एकत्र शक्ति हर ली गई है। मैं अब विषहीन सर्प की भाँति कमजोर हो गया हूँ।
पाशंकर निराकार बाष्प के समान अदृश्य हो जाता है।

नागबन्धु को बहुत अविश्वसनीय सदमा पहुँचता है।
गरुड़, तुम! तुम्हारे दिन अब इने-गिने हैं। यदि साहस है तो मेरा सामना करो।

तांत्रिक की चेतावनी से आदित्य चिंतित हो जाता है। एक ज्योतिर्मय आकार उसके निकट आता है।

आदित्य एक कोमल स्वर सुनता है जो निर्देश देता है।
आदित्य, मेरे पुत्र! अब शैतान के मूल स्रोत को कुचल देने की तुम्हारी बारी है...

विचित्र स्वर आदित्य के अधिक निकट आता है, लगभग फुसफुसाहट की तरह।
तुम्हें ध्यान देना है कि उसका शरीर उसी अग्निकुण्ड में फेंका जाये जिसने अनेक प्राणियोंको भस्म किया है। केवल अग्नि उसका विनाश कर सकती है। तुम...
...तभी तक सुरक्षित रहोगे जब तक पंख तुम्हारे साथ है।

उसके आक्रमण के पूर्व ही तुम प्रहार करो। उस पर पंख का प्रयोग सबसे अंत में करो।
आदित्य को अनुभव होने लगता है कि उसे अधिक शक्ति का बरदान मिल रहा है।

आपके आशीर्वाद से, हे प्रभु ! मुझे पूरा विश्वास है कि मानवता के इस खतरे से मैं मुक्त हो सकता हूँ।
जब कोमल ध्वनि बंद हो जाती है, आदित्य अपने दिवा स्वप्न से जागता है।

आदित्य उठ जाता है और अपनी पगडी की तह में पंख को सावधानीपूर्वक बाँधता है।
अब मुझे राजा से बिदा लेनी चाहिए। अब समय कम है !

आदित्य, चन्द्रपुरी की जनता तुम्हारी सफल और सुरक्षित वापसी की प्रतीक्षा करेगी। मेरी शुभकामनाएँ।
महाराज ! आपके आशीर्वाद से मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।
- क्रमशः

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१३

यहाँ हमारे पुराणों के कुछ तरुण नायकों की ओर संकेत है। क्या तुम उन्हें जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैंने युद्ध में अपने चाचाओं की सहायता के लिए चक्रव्यूह में प्रवेश करती सेना का नेतृत्व किया। लेकिन उससे वापस आने की युद्धकला का ज्ञान मुझे नहीं था। क्या मेरा नाम बता सकते हो?

----

2. भगवान विष्णु के बरदान से मैं आसमान में तेज चमकीला तारा बन गया। मेरा नाम क्या है?

----

3. जब मेरे पिता ने मुझे यम को दान में दे दिया तब मैंने मृत्यु के देवता से जीवन और मृत्यु के रहस्य सीखे। मैं कौन हूँ?

----

4. मैंने अपने नेत्रहीन माता-पिता को अपने कन्धों पर ढोया और एक युवा राजकुमार द्वारा अन्धेरे में बाण से मारे जाने तक उनकी देखभाल करता रहा। क्या तुम मुझे जानते हो?

----

5. मेरे पिता ने कई बार मुझे मारने का प्रयास किया। परन्तु हर बार मेरे इष्टदेव ने मेरी रक्षा की। मेरा नाम क्या है?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक .... है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ नवम्बर से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१२
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अगस्त अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

अभय कुमार मिश्र

अमलापाडा, पोस्ट/जिला - डेनकानाल,

उड़ीसा - ७५९ ००१.

विजयी प्रविष्टि

कठपुतली को नचाता इन्सान की डोरी।
इन्सान को नचाता तकदीर की डोरी।।

मनोरंजन टाइम्स (पृष्ठ ५४-५५) के उत्तर

उन्हें खोज निकालो !

१. डिनो की भौंहें
२. डिनो के धब्बे
३. डिनो के पाँव के अंगूठे
४. बन्नी का दाँत
५ पत्थर
६. बन्दर की पूँछ की लम्बाई
७ वृक्ष की शाखा
८. शाखा के चारों ओर लिपटी हुई बन्दर की पूँछ

अप्रत्यक्ष खतरा !

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) OCTOBER 2002 Registered No. TN/CPMG-866/2002
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57 Licensed to post without prepayment. WPP No. 541/02